नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 360, नई दिल्ली, शनिवार 28 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन में वही व्यक्ति दुखी है जो ख़ाली है काम मैं व्यस्त रहो और मस्त रहो।

03 अयोध्या रक्षक श्री हनुमान

06 पारिवारिक देखभाल करने वालों की देखभाल: करुणा के मौन स्तंभों...

08 जमशेदपुर में राष्ट्रपति पैदल चल कर जनता से मिली, बच्चों में बांटीं चाकलेट

28 फरवरी को जंतर–मंतर, नई दिल्ली में विशाल धरना प्रदर्शन

संजय कुमार बाठला

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन 28 फरवरी 2026, समय 2 बजे जंतर-मंतर, नई दिल्ली में एक विशाल धरना–प्रदर्शन आयोजित करने जा रहा है। एसोसिएशन के अध्यक्ष ने बताया कि केंद्र और राज्य सरकारें ट्रांसपोर्ट सेक्टर की समस्याओं को लगातार अनदेखा कर रही हैं। इसके चलते ना केवल दिल्ली, बल्कि हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान और पंजाब के ट्रांसपोर्टर्स व ड्राइवरों पर अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं।

मुख्य मुद्दे:

1. बाइक टैक्सी जो की प्राइवेट नंबर की है जिसमे सवारी का कोई इन्शुरन्स नहीं होता. ना ही इनकी कोई पुलिस वेरिफिकेशन होती है, धड़ल्ले से सरे आम पूरी दिल्ली एनसीआर में हर गली मोहल्ले से खुले आम सवारी उठा रहीं है. जिसमे महिलाओ की सुरक्षा का भी बड़ा सवाल है, इससे ऑटो टैक्सी वाले ड्राइवर्स को बहुत आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है.

2. ऐप्प बेस्ड टैक्सी का किराया सरकार द्वारा तय होना चाहिए. सारी ऐप बेस्ड कम्पनियो ने 10 सालो से कोई किराया इन टैक्सीयों का नहीं बढ़ाया बल्कि अपना कमिशन बड़ा दिया है. सरकार को इन टैक्सीयों के ड्राइवर्स की जान माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी तय करनी चाहिए क्योकि काफी ड्राइवर्स की कुछ बदमाशों के द्वारा हत्या की जा चुकी है और बाद में ये ऐप बेस्ड कंपनी अपनी जिम्मेदारी से मुकर जाती है.

3. पैनिक बटन सिस्टम की विफलता: परिवहन विभागों ने पैनिक बटन सिस्टम लागू तो कर दिया, लेकिन अधिकांश वाहनों में यह तकनीकी रूप से काम नहीं करता। इसके बावजूद दिल्ली सहित कई राज्यों में वाहन मालिकों से 10,000 रुपये तक वसूले जा रहे हैं।

4. बस बॉडी कोड AIS-153: यह नया कोड पहले से तैयार बसों पर भी लागू किया जा रहा है, जिससे वाहन मालिकों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ बढ़ा है।

5. स्पीड लिमिट डिवाइस की समस्याएँ: सड़क और ट्रैफिक की वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखे बिना स्पीड लिमिट डिवाइस लागू कर दिए गए हैं, जिससे चालकों को बार-बार परेशानी होती है।

6. इलेक्ट्रिक वाहनों को जबरन थोपना: सरकार कमर्शियल टैक्सी व बस ऑपरेटरों पर ईवी (EV) लागू करने का दबाव बना रही है, जबकि इनकी कीमत, चार्जिंग सुविधाएँ और मेंटेनेंस से जुड़े मुद्दे अब तक सुलझे नहीं हैं।

7. 60 दिनों में राज्य वापसी का आदेश: केंद्र सरकार के नए आदेश के अनुसार, जिस राज्य में वाहन पंजीकृत है, उसे 60 दिनों के भीतर उसी राज्य में लौटना अनिवार्य कर दिया गया है। जबकि वाहन मालिक पहले ही राज्य कर और ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट टैक्स (3 लाख रुपये तक) अदा करते हैं।

8. E-चालान का अत्याचार: लाखों गाड़ियों पर प्रतिदिन ई-चालान किए जा रहे हैं, जिनमें से कई बोगस होते हैं। 45 दिन में भुगतान न करने पर वाहन ब्लैकलिस्ट कर जब्त किए जा रहे हैं। अदालत में चुनौती देने पर भी लंबी प्रक्रिया के कारण ड्राइवरों को भारी नुकसान होता है।

9. राजस्थान में लगेज कैरियर पर कार्रवाई: टैक्सी-बसों पर लगे कैरियर के चालान और जब्ती की जा रही है, जबकि पर्यटक लंबे टूर पर जाते हैं और लगेज रखना आवश्यक होता है।

10. उत्तर प्रदेश में टैक्स नीति में बदलाव: पहले हर वर्ष टैक्स लिया जाता था, अब 15 साल का टैक्स एक साथ वसूला जा रहा है, जिससे आर्थिक बोझ बढ़ा है।

11. उत्तराखंड में चारधाम यात्रा पर प्रतिबंध: अब अन्य राज्यों की गाड़ियों को केवल 15 दिन की अनुमति दी जाती है और हर 15 दिन में दोबारा फीस देनी होती है, जबकि पहले यह अनुमति 6 महीने के लिए होती थी।

संजय सम्राट ने कहा कि इन सभी मुद्दों पर एसोसिएशन भारत सरकार के परिवहन मंत्रालय, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की सरकारों के खिलाफ यह शांतिपूर्ण प्रदर्शन करेगा, ताकि ट्रांसपोर्ट सेक्टर की वास्तविक समस्याएँ प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों तक पहुँच सकें और इनका समाधान निकले।

अध्यक्ष – दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन

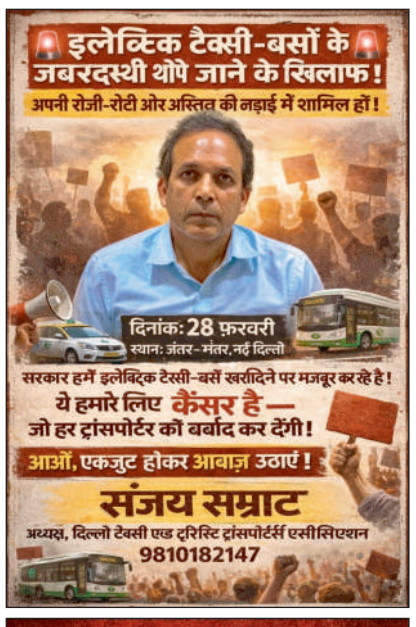

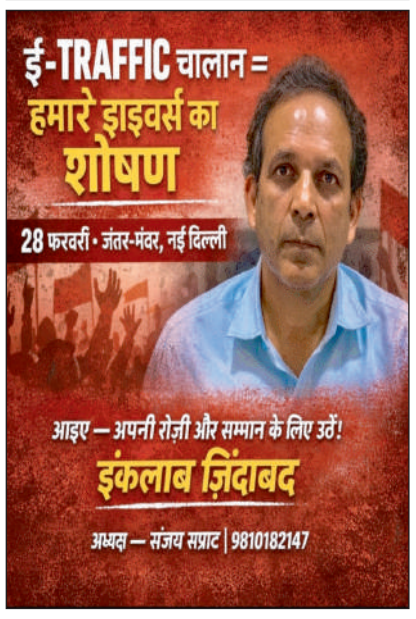

अनुभवी एवं अप्रशिक्षित पत्रकारों के लिए विशेष आमंत्रण

यदि आप फील्ड में काम कर चुके हैं या करने के इच्छुक है, ज़मीनी पत्रकारिता का अनुभव रखते हैं, या करना चाहते हैं, और सच के साथ खड़े रहने का जज़्बा रखते हैं — तो यह संदेश आपके लिए है।

"परिवहन विशेष" हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में दैनिक प्रकाशित (आर. एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त)
"परिवहन विशेष एवं न्यूज ट्रांसपोर्ट विशेष यू ट्यूब चैनल"

अपने विस्तार के तहत अनुभवी, इच्छुक और जिम्मेदार पत्रकारों को आमंत्रित करता है।

उपलब्ध दायित्व (अनुभव अनुसार):
* राष्ट्रीय / राज्य / जिला स्तर
* ब्यूरो प्रमुख
* सीनियर रिपोर्टर
* क्राइम रिपोर्टर / क्राइम हेड
* संपादकीय सहयोग

हम क्या देते हैं:
* अनुभव के अनुरूप जिम्मेदारी
* स्वतंत्र डिजिटल न्यूज़ प्लेटफॉर्म
* खबरों को प्राथमिकता देने वाला मंच
* सम्मान के साथ कार्य का अवसर

यह अवसर नए एवं अप्रशिक्षित दोनों के लिए है।

संपर्क करते समय भेजें:
* संक्षिप्त पत्रकारिता अनुभव
* मीडिया संस्थान का विवरण
* प्रेस / आधार आईडी

संपर्क:
संजय कुमार बाठला
प्रधान संपादक – परिवहन विशेष
व्हाट्सएप / फोन: 9811732095
ईमेल एड्रेस:- newstransportvishesh@gmail.com

अनुभव और इच्छाशक्ति अगर है, तो मंच मिलना चाहिए।
"परिवहन विशेष" आपके अनुभव और इच्छाओं का सम्मान करता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

"पासकी: सुरक्षित डिजिटल पहचान की भविष्य की चाबी"

पासवर्ड चोरी हो सकते हैं। ओटीपी फ़िशिंग से निकल सकते हैं। लेकिन पासकी खेल बदल देती है।

पासकी: भविष्य की सुरक्षित चाबी क्योंकि एक हैंडशेक होता है —

– पब्लिक की ऑनलाइन सेवा के पास रहती है,

– और प्राइवेट की आपके डिवाइस पर सुरक्षित रहती है।

इससे फ़िशिंग खतरे लगभग समाप्त हो जाते हैं।

अगर कोई ऐप या साइट असली जैसी दिखे लेकिन वास्तव में आपकी लॉगिन जानकारी चुराने की कोशिश कर रही हो, तो वहाँ पासकी से लॉगिन करने का विकल्प ही नहीं मिलेगा।

हम किसी चालाक फ़िशिंग प्रयास से धोखा खा सकते हैं, लेकिन पासकी कभी नहीं।

पासकी कैसे काम करती है

– एक पब्लिक की ऑनलाइन सेवा के पास रहती है।

– एक प्राइवेट की आपके डिवाइस पर सुरक्षित रहती है।

– प्रमाणीकरण एक क्रिप्टोग्राफ़िक हैंडशेक से होता है—कोई पासवर्ड इंटरनेट पर नहीं भेजा जाता।

फ़िशिंग पासकी के सामने क्यों असफल होती है

– नकली वेबसाइट चाहे असली जैसी दिखे, वह पासकी लॉगिन विकल्प को सक्रिय नहीं कर सकती।

– इंसान धोखा खा सकता है—लेकिन पासकी नहीं।

– इससे फ़िशिंग प्रयास, जो सबसे आम साइबर अपराध है, निष्फल हो जाते हैं।

पासकी के लाभ

– मजबूत सुरक्षा: पासवर्ड पुनः उपयोग, कमजोर क्रेडेंशियल और फ़िशिंग समाप्त।

– सरल लॉगिन: बस फिंगरप्रिंट, फेस स्कैन या डिवाइस पिन।

– क्रॉस-प्लेटफ़ॉर्म: ऐप्स, ब्राउज़र और डिवाइस पर काम करती है।

– प्राइवेसी प्रथम: की आपके डिवाइस से बाहर नहीं जाती, जिससे डेटा उल्लंघन का जोखिम घटता है।

-आगे की चुनौतियाँ

– अपनाने के लिए प्लेटफ़ॉर्म, सेवा प्रदाता और नियामकों के बीच सहयोग आवश्यक।

– उपभोक्ता जागरूकता अभियान भरोसा बनाने और अपनाने को बढ़ावा देने के लिए ज़रूरी।

– बैकअप और रिकवरी तंत्र उपयोगकर्ता-अनुकूल होना चाहिए ताकि लॉकआउट से बचा जा सके।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य

– टेक दिग्गज (Apple, Google, Microsoft) पासकी समर्थन ला रहे हैं।

– FIDO Alliance जैसी इंडस्ट्री संस्थाएँ इंटरऑपरेबिलिटी मानक बना रही हैं।

– विश्वभर के नियामक पासकी को भविष्य के प्रमाणीकरण की आधारशिला मान रहे हैं।

भारत के लिए सिफ़ारिशें

– बैंकों, टेलीकॉम और सरकारी पोर्टल्स को पासकी अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

– नागरिक जागरूकता अभियान शुरू करें: "पासवर्ड अतीत हैं, पासकी भविष्य है।"

– वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप इंटरऑपरेबिलिटी और उपभोक्ता संरक्षण सुनिश्चित करें।

पासकी केवल एक अपग्रेड नहीं है—यह एक पैरेडाइम शिफ्ट है।

यह एक ऐसे भविष्य का वादा करती है जहाँ फ़िशिंग ख़तरे समाप्त होंगे, लॉगिन सहज होंगे और डिजिटल पहचान वास्तव में सुरक्षित होगी।

आई० पी० मुख्यालय पर दिल्ली परिवहन मजदूर संघ द्वारा अपनी मांगों के समर्थन में धरना प्रदर्शन किया गया

संजय कुमार बाठला

प्रमुख मांगें इस प्रकार थी:-

1. डी० टी० सी० की अपनी 5000 नई बसें लेकर आए सरकार।

2. 22000 अनुबंधीत करमचारियों को स्थाई किया जाए और जब तक स्थाई नहीं किया जाता तब तक Basic+DA दिया जाए।

3. 20000 डी० टी० सी० पेंशनधारियों को समय पर पेंशन देने का स्थाई समाधान किया जाए।

इन मांगों को लेकर हजारों कर्मचारियों ने प्रर्दशन में भाग लिया। इस प्रर्दशन की अध्यक्षता प्रधान श्री गूगन सिंह जी ने की। मंच का संचालन महामंत्री श्री भानू भास्कर जी ने किया। भारतीय मजदूर संघ की ओर से प्रदेश महामंत्री श्री दीपेन्द्र बाहर जी व भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ के संगठन मंत्री श्री कैलाश मलिक जी व दिल्ली परिवहन मजदूर संघ के प्रभारी श्री विजेन्द्र सिंह जी व कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद मलिक जी, उप-महामंत्री श्री संजय पंडित जी. संगठन मंत्री श्री शेखर गहलोत जी तथा कई अन्य पदाधीकारियों ने कर्मचारियों को संबोधित किया। उद्योगहित।

पित्त दोष और आर्युवेद

संजय कुमार बाठला

आयुर्वेद के अनुसार हर व्यक्ति के शरीर की अपनी एक अलग प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति को वात, कफ और पित्त के अनुसार अलग-अलग भागों में विभाजित किया जाता है। जब शरीर में वात, कफ और पित्त दोष उत्पन्न होने लगते हैं, तो इससे शरीर में कई तरह के रोग उत्पन्न होना शुरू हो जाते हैं।

इन दोषों को दूर कर कई बीमारियों से बचाव किया जा किया जा सकता है। आज आपको पित्त दोष से होने वाली समस्याओं के बारे में बताया गया है। साथ ही, आयुर्वेद में इन समस्याओं का इलाज कैसे किया जा सकता है।

शरीर में पित्त दोष क्यों उत्पन्न होता है? - पित्त दोष शरीर की अग्नि और जल तत्व से मिलकर बना होता है। जब इनका संतुलन खराब होता है, तो इससे आपको पित्त दोष की समस्या हो सकती है।

*** शरीर में एनर्जी के फ्लो में बाधा,**
*** मेटाबॉलिज्म के कार्य में गड़बड़ी और**
* गर्मी की वजह से होने वाली प्रतिक्रियाओं का सीधा संबंध पित्त दोष से होता है। पित्त दोष होने पर आपकी पाचन क्रिया प्रभावित होती है। जिससे आपको पाचन से जुड़ी समस्याएं हो सकती है।

पित्त दोष होने पर क्या लक्षण दिखाई देते हैं? पित्त दोष में गैस्ट्रोइंस्टेस्टाइनल ट्रैक्ट में समस्या हो सकती है। इसमें त्वचा, आंखें और लिवर की समस्या होने की संभावना बढ़ती है।

जानते है पित्त दोष में किस तरह के लक्षण महसूस होते हैं।
1. ज्यादा गर्मी लगना
2. स्किन में मुंहासे व फोड़े होना
3. एसिडिटी
4. बार-बार प्यास लगना
5. उल्टी में पीला पानी निकलना
6. जी मिचलाना
7. दस्त की समस्या
8. चिड़चिड़ापन और गुस्सा आना, आदि।

पित्त दोष को बढ़ाने वाले कारक क्या होते हैं?
1. संतुलित आहार का सेवन न करना,
2. ज्यादा तीखा, खट्टा या नमकीन भोजन खाना
3. शराब का अधिक सेवन करना
4. धूप में ज्यादा समय बिताना
5. ज्यादा गर्म खाना खाने से भी पित्त प्रभावित हो सकता है।

पित्त दोष को कैसे करें शांत?
* आवश्यक सामग्री
* घी - आधा चम्मच (देसी गाय का)
* हरी इलायची - 5
* मिश्री - आधा चम्मच

कैसे इस्तेमाल करें एक बाउल में आप हरी इलायची का पाउडर, आधा चम्मच घी और मिश्री का आधा चम्मच पाउडर मिलाएं।

* सुबह व शाम को खाली पेट इन सभी का सेवन करें। इसके सेवन के बाद करीब 15 से 20 मिनट तक कुछ न खाएं।

कुछ ही दिनों में आपको अम्ल पित्त, एसिडिटी में आराम मिलना शुरु हो जाएगा।

सनाय + मुलेठी का पारंपरिक नुस्खा

संजय कुमार बाठला

1. मुख्य घटक
* सनाय (Senna) – आंतों की गति बढ़ाने में सहायक
* मुलेठी (Licorice) – जलन व सूजन में पारंपरिक उपयोग
2. संयुक्त रूप से लाभ
* कब्ज में सहायक
* पेट की जलन में आराम देने में सहायक
* मल त्याग को आसान बनाने में मददगार
* कब्ज के साथ होने वाले हल्के दर्द/असुविधा में सहायक

*** कैसे बनाएं?**
* सामग्री (1 दिन की मात्रा)
* सनाय पत्ती चूर्ण – 1 ग्राम (लगभग ¼ छोटा चम्मच)
* मुलेठी चूर्ण – 1 ग्राम (लगभग ¼ छोटा चम्मच)
* गुनगुना पानी – 1 कप

*** बनाने की विधि**
1. दोनों चूर्ण को अच्छे से मिला लें।
2. रात को सोने से पहले 1 कप गुनगुने पानी के साथ लें या
3. चाहें तो 1 कप पानी में 5–7 मिनट हल्का उबालकर छानकर भी ले सकते हैं।

*** सेवन विधि (Dose)**
* दिन में 1 बार, रात को सोने से पहले
* लगातार 5–7 दिन से अधिक बिना विशेषज्ञ सलाह के ना लें
* बच्चों, गर्भवती महिलाओं या गंभीर बीमारी वाले व्यक्ति पहले विशेषज्ञ से सलाह लें

*** सावधानियां**
* अधिक मात्रा लेने से दस्त हो सकते हैं
* लंबे समय तक लगातार उपयोग उचित नहीं
* यदि तेज पेट दर्द या कमजोरी हो तो उपयोग बंद

यह केवल स्वास्थ्य जागरूकता हेतु सूचना है।

फैटी लिवर और पेट भारीपन में कुटकी पाउडर का पारंपरिक नुस्खा

संजय कुमार बाठला

अगर फैटी लिवर की वजह से पेट भारी रहता है, भूख कम लगती है या सुस्ती महसूस होती है, तो कुटकी (पिक्रोराइज़ा) आयुर्वेद में लिवर सपोर्ट के लिए जानी जाती है। इसे पाचन और लिवर फंक्शन को संतुलित करने में सहायक माना गया है।

कुटकी क्यों लाभकारी मानी जाती है
* लिवर को डिटॉक्स सपोर्ट देने में सहायक
* पाचन सुधारने में मददगार
* भूख बढ़ाने में सहायक
* शरीर की अतिरिक्त गर्मी संतुलित करने में उपयोगी
* सुस्ती और भारीपन कम करने में सहायक

* संभावित फायदे
* फैटी लिवर में सहायक सपोर्ट
* पेट का भारीपन कम होना
* गैस और अपच में राहत
* ऊर्जा स्तर में सुधार
* त्वचा की चमक में हल्का सुधार

सेवन करने का सही तरीका
* आधा छोटा चम्मच कुटकी पाउडर लें
* एक कप गुनगुने पानी के साथ मिलाकर पिएं
* दिन में 1 बार सुबह खाली पेट लें
* 4–6 हफ्ते नियमित लेने पर असर दिख सकता है

बेहतर परिणाम के लिए
* तली-भुनी और ज्यादा तेल वाली चीजें कम करें
* रोज 30 मिनट तेज चाल से चलें
* मीठा और कोल्ड ड्रिंक से परहेज करें
* वजन नियंत्रित रखें
* पर्याप्त पानी पिएं

*** सावधानियां**
* गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएं बिना सलाह न लें
* अत्यधिक मात्रा लेने से दस्त या पेट दर्द हो सकता है
* यदि लिवर एंजाइम बहुत अधिक बढ़े हों तो डॉक्टर की देखरेख जरूरी है
* पहले से कोई दवा चल रही हो तो आयुर्वेदिक औषधि शुरू करने से पहले चिकित्सक से सलाह लें

नोट: फैटी लिवर एक मेडिकल कंडीशन है उस समय यह नुस्खा सपोर्ट के रूप में लिया जा सकता है, लेकिन नियमित जांच और डॉक्टर की सलाह जरूरी है।

कांजी – पारंपरिक भारतीय प्रोबायोटिक पेय

संजय कुमार बाठला

कांजी एक पारंपरिक भारतीय फर्मेंटेड पेय है, जो स्वाद में खट्टा-मसालेदार और सेहत के लिए बेहद लाभकारी होता है। इसे खासकर होली के आसपास बनाया जाता है।

*** सामग्री -**
* काली गाजर – 3–4 (छीलकर लंबाई में काट लें)
* चुकंदर – 1–2 (छीलकर लंबाई में काट लें)
* राई (सरसों) के दाने – 2 बड़े चम्मच (दरदरे पिसे हुए)
* पानी – 1.5 से 2 लीटर
* नमक – स्वादानुसार
* लाल मिर्च पाउडर – ½ छोटा चम्मच
* काली मिर्च पाउडर – ¼ छोटा चम्मच

*** विधि-** गाजर और चुकंदर को अच्छी तरह धोकर छील लें और लंबाई में पतले टुकड़ों में काट लें।

1. एक बड़े कांच के जार में 1.5–2 लीटर पानी भरें।
2. इसमें गाजर, चुकंदर, दरदरी पिसी राई, नमक, लाल मिर्च और काली मिर्च डालें।
3. लकड़ी के चम्मच से अच्छी तरह मिलाएं ताकि मसाले पानी में घुल जाएं।
4. जार को ढक्कन से ढककर 4–5 दिन के लिए धूप वाली जगह पर रखें।

हर दिन एक बार साफ चम्मच से चलाएं।

जब पानी का स्वाद खट्टा और मसालेदार हो जाए, तो कांजी तैयार है।

परोसने का तरीका -
1. ठंडा करके गिलास में परोसें।
2. गाजर और चुकंदर के टुकड़े भी साथ में खाए जा सकते हैं।
3. फ्रिज में रखने पर 2–3 दिन तक ताज़ा रहती है।

फायदे -
1. पाचन में सहायक
2. प्राकृतिक प्रोबायोटिक
3. शरीर को डिटॉक्स करने में मददगार
4. गर्मियों में ठंडक प्रदान करती है

सिरका स्वाद और शुद्ध

संजय कुमार बाठला

1. प्याज़ का सिरका
* सामग्री
* प्याज़ – 2 मध्यम (पतले कटे हुए)
* चीनी – 1 टेबलस्पून
* पानी – 2 कप
* बनाने की विधि
1. एक साफ़ कांच की बोतल लें।
2. उसमें प्याज़, चीनी और पानी डालें।
3. बोतल ढककर हल्की गर्म जगह पर रखें।
4. रोज़ एक बार बोतल हिलाएँ।
5. 12–15 दिन बाद छान लें।
6. तैयार सिरका ठंडी जगह रखें।

उपयोगः सलाद, चटनी, अचार

2. गन्ने का सिरका
* सामग्री
* ताज़ा गन्ने का रस – 2 कप
* पुराना सिरका – 2 टेबलस्पून (वैकल्पिक)
* बनाने की विधि
1. गन्ने का रस कांच की बोतल में डालें।
2. चाहें तो पुराना सिरका मिलाएँ।
3. बोतल ढककर अंधेरी गर्म जगह रखें।
4. 20–25 दिन बाद छान लें।
5. बोतल में भरकर रखें।

उपयोगः चाइनीज़ फूड, सलाद

3. जामुन का सिरका
* सामग्री
* जामुन – 1 कप (मसलकर)
* चीनी – 2 टेबलस्पून
* पानी – 1 कप
* बनाने की विधि
1. जामुन अच्छे से मसल लें।
2. बोतल में जामुन, चीनी और पानी डालें।
3. बोतल बंद करके रखें।
4. रोज़ हल्का हिलाएँ।
5. 22–25 दिन बाद छान लें।

उपयोगः डायबिटीज़, सलाद

4. अंगूर का सिरका
* सामग्री
* काले अंगूर – 1 कप (मसलकर)
* चीनी – 2 टेबलस्पून
* पानी – 1 कप
* बनाने की विधि
1. अंगूर मसलकर बोतल में डालें।
2. चीनी और पानी मिलाएँ।
3. बोतल ढककर रखें।
4. 20–22 दिन बाद छान लें।

उपयोगः वजन घटाने, ड्रिंक्स, सलाद

5. चावल का सिरका
* सामग्री
* पके चावल – 1 कप
* चीनी – 1 टेबलस्पून
* पानी – 2 कप
* बनाने की विधि
1. सभी सामग्री बोतल में डालें।
2. ढककर गर्म जगह रखें।
3. 15–20 दिन बाद छान लें।
4. ठंडी जगह स्टोर करें।

* उपयोगः चाइनीज़ रेसिपी, सूप

6. सेब का सिरका
* सामग्री
* सेब – 3 (कटे या कद्दूकस)
* चीनी – 2 टेबलस्पून
* पानी – आवश्यकतानुसार
* बनाने की विधि
1. सेब बोतल में डालें।
2. चीनी और पानी मिलाएँ (सेब डूब जाएँ)।
3. बोतल ढककर रखें।
4. रोज़ हिलाएँ।
5. 20–25 दिन बाद छान लें।

* उपयोगः वजन घटाने, पाचन, त्वचा

*** जरूरी टिप्स**
* कांच की बोतल ही इस्तेमाल करें
* धूप से दूर रखें
* सिरका खट्टा और हल्की खुशबू वाला होना चाहिए
* 6–12 महीने तक सुरक्षित रहता है।

-"दही और कफ"- "" क्या आपको भी दही खाना पसंद है""

संजय कुमार बाठला

दही गर्म है, फिर भी कफ क्यों बढ़ाता है - कफ है क्या? आयुर्वेद कहता है कि हमारा शरीर पंचमहाभूतों से बना है – आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इनमें से जल और पृथ्वी का मेल जो बनाता है, वही कफ है। अगर आप पानी और मिट्टी मिलाते हैं तो क्या बनता है कीचड़। भारी, गीला, चिपचिपा। यही कफ का बेसिक नेचर है।

कफ के गुण क्या हैं?
* गुरु (भारी)
* शीत (ठंडा)
* स्निग्ध (चिकना)
* स्थिर
* मंद

यानी ठंडा और चिकना – यह इसके मुख्य गुण हैं:- सिर्फ "गरम-ठंडा" से बात पूरी नहीं होती, अक्सर लोग सोचते हैं कि अगर कफ ठंडा है तो उसे ठीक करने के लिए गर्म चीज दे दो। बात इतनी आसाम नहीं है।

आयुर्वेद में इलाज का एक बड़ा सिद्धांत है – गुण चिकित्सा। यानी बीमारी के गुण समझो और फिर उसके उलटे गुण वाली चीज दो।

अब ध्यान से समझिए
* वात ठंडा होता है, लेकिन उसका गुण रूक्ष (सूखा) है।
* कफ ठंडा होता है, लेकिन उसका गुण स्निग्ध (चिकना) है।

दोनों ठंडे हैं, लेकिन एक सूखा है और दूसरा चिकना, यही फर्क समझना जरूरी है।

वात और कफ का अंतर
वात = ठंडा + सूखा
कफ = ठंडा + चिकना

अगर वात बड़ा है, तो हमें क्या देना चाहिए
* गर्म + चिकनाः- ताकि सूखापन कम हो और ठंडक भी संतुलित हो जाए।

लेकिन अगर कफ बढ़ा है, तो हमें क्या चाहिए
* गर्म + रूखाः- ताकि चिकनापन और भारीपन कम हो।

यहीं पर लोग गलती कर देते हैं, वे सिर्फ "गर्म" देख लेते हैं, बाकी गुण भूल जाते हैं।

अब आते हैं दही पर

दही का स्वभाव आयुर्वेद में उष्ण (गर्म) माना गया है। लेकिन उसके साथ एक और महत्वपूर्ण गुण है – वह स्निग्ध यानी चिकना है।

अब सोचिए, कफ पहले से ही चिकना और भारी है, अगर आप दही खाते हैं, तो वह भले ही गर्म हो, लेकिन उसका चिकनापन कफ को और बढ़ा देगा। यानी, दही का स्निग्ध गुण कफ के स्निग्ध गुण को सपोर्ट करेगा।

नतीजा कफ और जमा होगा। इसीलिए कई लोगों को दही खाने के बाद बलगम, सर्दी, नाक बंद, या गले में कफ बढ़ जाता है।

ऋतु का उदाहरण समझिए
* सर्दियों में शरीर में कफ जमा होता है। फिर जैसे ही
* वसंत ऋतु आती है और हल्की गर्मी बढ़ती है, तो वही जमा हुआ कफ पिघलने लगता है।
* इस समय सर्दी-खांसी, एलर्जी ज्यादा क्यों होती है क्योंकि जमा हुआ कफ पिघलकर बाहर आना शुरू करता है।
* अगर इसी समय आप दही जैसी स्निग्ध चीजें खाएंगे, तो कफ को और सपोर्ट मिलेगा।

तो कफ में क्या देना चाहिए अगर कफ बढ़ा हुआ है, तो सिर्फ गर्म नहीं, बल्कि गर्म और रूखा चाहिए।

उदाहरण के लिए
* काली मिर्च
* सूखी अदरक
* हरड़
* शहद
* गौमूत्र आधारित औषधियां (चिकित्सकीय सलाह से)

यह चीजें गर्म भी हैं और रूखी भी, इसलिए कफ को काटती हैं।

दही कब ठीक है दही पूरी तरह गलत नहीं है। यह वात संबंधी रोगों में ज्यादा उपयोगी है, क्योंकि वहां सूखापन होता है। अगर किसी को वात की समस्या है – जैसे सूखापन, कमजोरी, जोड़ों में खड़कने की आवाज – तो सीमित मात्रा में दही मदद कर सकता है।

लेकिन कफ और पित्त प्रधान व्यक्ति को सावधानी रखनी चाहिए।

* अगर दही लेना ही है तो कैसे लें
* अगर कफ की प्रवृत्ति है और फिर भी दही लेना है, तो उसे बैलेंस करना जरूरी है।
* दही के साथ
* शहद
* काली मिर्च
* आंवला

जैसी चीजें मिलाकर लिया जाए तो उसका प्रभाव संतुलित किया जा सकता है।

सादा दही रात में खाना, खासकर कफ प्रवृत्ति वालों के लिए, अक्सर परेशानी बढ़ा सकता है।

असली बात क्या है
* सिर्फ "गरम है या ठंडा" देखकर फैसला मत कीजिए।

आयुर्वेद गुणों की भाषा में सोचता है – गुरु या लघु, स्निग्ध या रूक्ष, स्थिर या चल।

दही गर्म होते हुए भी कफ बढ़ा सकता है, क्योंकि उसका स्निग्ध और गुरु गुण कफ के गुणों से मेल खाता है। अगर आपको यह सिद्धांत समझ में आ गया, तो आधा आयुर्वेद क्लियर हो जाएगा। शरीर को समझिए, गुणों को पहचानिए, और समझदारी से खाइए।

अयोध्या रक्षक श्री हनुमान

पिंकी कुंडू

अयोध्या भगवान श्रीराम की नगरी, लेकिन हम में से बहुत कम लोग जानते हैं कि इस पवित्र नगरी की रक्षा का दायित्व स्वयं हनुमान जी ने संभाला हुआ है और उसी दिव्य पहरेदारी का नाम है — हनुमानगढ़ी।

जब रामराज्य समाप्त हुआ रामायण के अनुसार जब भगवान श्रीराम ने पृथ्वी लीला समाप्त कर साकेत धाम जाने का समय तय किया, तब अयोध्या के भक्त रो पड़े। तब श्रीराम ने अपने सबसे प्रिय भक्त हनुमान जी को आदेश दिया: "जब तक मेरा नाम इस पृथ्वी पर लिया जाएगा, तुम अयोध्या की रक्षा करना।" हनुमान जी ने आदेश स्वीकार किया और उन्होंने अयोध्या की ऊँची पहाड़ी पर अपना निवास बनाया। यही स्थान आगे चलकर हनुमानगढ़ी कहलाया।

अयोध्या के अदृश्य रक्षक मान्यता है कि अयोध्या में प्रवेश करने से पहले हर देवता, संत और भक्त सबसे पहले हनुमानगढ़ी में माथा टेकते हैं।

क्यों? क्योंकि अयोध्या के कोतवाल स्वयं हनुमान जी हैं उनकी अनुमति के बिना रामलला के दर्शन भी अधूरे माने जाते हैं। इसलिए आज भी परंपरा है: पहले हनुमानगढ़ी, फिर राम जन्मभूमि।

गुफा का रहस्य कहा जाता है कि प्राचीन समय में हनुमान जी यहाँ एक गुफा में ध्यान करते थे, वहीं से वे पूरी अयोध्या पर नज़र रखते थे। मंदिर के अंदर स्थापित बाल रूप हनुमान जी की मूर्ति इसी कथा से जुड़ी मानी जाती है — जैसे वे आज भी राम नगरी की रक्षा कर रहे हों।

संघर्ष और चमत्कार इतिहास में कई बार आक्रमण हुए, लेकिन लोककथाओं में विश्वास है कि जब भी हनुमानगढ़ी पर संकट आया, किसी न किसी चमत्कार से मंदिर सुरक्षित बच गया। भक्त मानते हैं — यह सिर्फ मंदिर नहीं, अयोध्या की आध्यात्मिक सुरक्षा कवच है।

ॐ हं हनुमते नमः

हनुमानगढ़ी के बजरंगबली का संदेश — भक्ति भी मिले --- शक्ति भी मिले और हर बाधा स्वयं दूर हो जाए। जहाँ हनुमान का नाम वहाँ भय का काम खत्म। संकट कटे, मन मजबूत बने, और हर प्रयास सफल हो।

परिवार में सास - बहू की क्या भूमिका होती है? मां पार्वती .....

पिंकी कुंडू

कैलाश पर्वत पर संध्या का समय था, हिमालय की शीतल वायु बह रही थी। माता पार्वती ने गंभीर भाव से भगवान शिव से प्रश्न किया —"हे नाथ!

* परिवार में सास की क्या भूमिका होती है?

* क्यों कभी-कभी सास और बहू के संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाता है?

* शास्त्रों की दृष्टि से सास का कर्तव्य क्या है?"

महादेव ने शांत स्वर में कहा— सुनो पार्वती

1. सास – परिवार की धुरी (आधार स्तंभ) "देवि! सास वह स्त्री है जिसने परिवार को जन्म दिया, संस्कार दिए और घर की मर्यादा को संभाला। वह केवल पति की माता ही नहीं, बल्कि कुल परंपरा की संरक्षिका होती है।

उसका कर्तव्य है कि वह बहू को पुत्रीवत् अपनाए और घर के संस्कार प्रेम से सौंपे।"

2. सास का धर्म – मार्गदर्शन, न कि शासन "यदि सास मार्गदर्शक बने तो परिवार स्वर्ग बन जाता है, पर यदि वह अधिकार का अहंकार रखे, तो घर में अशांति जन्म लेती है।

सास को 'माता' का स्थान इसलिए दिया गया है कि वह करुणा और धैर्य का प्रतीक बने।"

3. बहू का आगमन – परिवर्तन का समय "जब नई बहू घर में आती है, तो वह अपने संस्कार साथ लाती है। सास का कर्तव्य है कि वह उसे समझे, समय दे, और धीरे-धीरे परिवार की रीति सिखाए।

जैसे नदी सागर में मिलकर अपना स्वरूप बनाए रखती है, वैसे ही बहू को भी सम्मान मिलना चाहिए।"

4. तनाव का कारण "देवि! अधिकतर कलह का कारण अपेक्षा और अहंकार है। जहाँ 'मेरा घर' और 'मेरे नियम' का आग्रह अधिक होता है, वहाँ प्रेम घट जाता है।

जहाँ संवाद, धैर्य और परस्पर सम्मान होता है, वहाँ कलह स्वतः शांत हो जाती है।"

5. आदर्श सास का स्वरूप

1. वह न्यायप्रिय हो
2. पक्षपात न करे
3. बहू को बेटी का स्थान दे
4. पुत्र को भी धर्म का स्मरण कराए

5. परिवार में प्रेम और संतुलन बनाए रखे

फिर शिव ने गंभीर होकर कहा

1. "हे पार्वती! परिवार एक यज्ञ है।

2. सास उस यज्ञ की अग्नि है — यदि अग्नि संयमित और पवित्र हो, तो यज्ञ सफल होता है पर यदि अग्नि प्रचंड हो जाए, तो सब कुछ भस्म कर देती है।

इसलिए सास का धर्म है — संयम, करुणा और समता।"

माता पार्वती मुस्कुराईं और बोलीं— "नाथ! अब मैं समझ गई कि परिवार की शांति सास और बहू दोनों के धैर्य पर आधारित है।"

बजरंग बाण के गुप्त प्रयोग "जब जीवन अभिचार से ग्रसित हो"

थोड़ा सा होश और साक्षी भाव: इस साधना को करते समय थोड़ा सा होश रखिए। देखिए कि कैसे बाधाएँ दूर हो रही हैं, कैसे ऊर्जा बढ़ रही है। मंत्रों को यंत्रवत न दोहराएँ। हर शब्द को महसूस करें। हर पाठ के साथ हनुमान जी की उपस्थिति को अनुभव करें। हवन करते समय देखिए - अग्नि कैसे आपकी बाधाओं को जला रही है, कैसे नकारात्मकता भस्म हो रही है। बस देखते रहिए। साक्षी बने रहिए। जब साक्षी भाव आएगा, तो यह साधना और भी गहरा असर दिखाएगी। अंतिम बात: बजरंग बाण से बड़ा कोई संकटमोचन नहीं। हनुमान जी की कृपा से कोई बाधा टिक नहीं सकती। यह साधना उनकी असीम कृपा पाने का सबसे सरल मार्ग है। 11 दिन की इस साधना के बाद आप खुद महसूस करेंगे कि जीवन से बोझ उतर गया, बाधाएँ समाप्त हो गईं और हर तरफ सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो गया। हनुमान जी की कृपा से शत्रु नष्ट होते हैं, तंत्र समाप्त होता है, पितृ शांत होते हैं और जीवन में सुख-शांति आती है।

पिंकी कुंडू

ॐ हनुमते नमः!

एक ऐसा गुप्त प्रयोग जो बजरंग बाण पर आधारित है। यह प्रयोग उन लोगों के लिए संजीवनी से कम नहीं है जो जीवन में किसी न किसी बाधा से घिरे हुए हैं। जब लगे कि जीवन ठप्प हो गया, हर काम में रुकावट आ रही है, कोई न कोई बाधा सामने आ जाती है, तब यह प्रयोग कीजिए।

कब करें यह प्रयोग?

1. शत्रु बाधा जब दुश्मन सिर उठाए, कोई नुकसान पहुँचाने की कोशिश करे, केस-मुकदमे में फँसा दें, ऑफिस में कोई पीठ पीछे खराबी करे।

2. तंत्र बाधा जब लगे कि किसी ने तांत्रिक प्रयोग किया है, अचानक सेहत बिगड़ने लगे, बिना वजह घबराहट हो, नींद न आए, कोई नकारात्मक ऊर्जा चारों ओर घेरे।

3. पितृ दोष / पितृ बाधा / पितृ बंधन जब घर में अशांति हो, संतान न हो, अचानक धन हानि हो, कुंडली में पितृ दोष हो, पूर्वजों की कृपा न मिल रही हो।

कितना कारगर है यह प्रयोग? यह कोई साधारण प्रयोग नहीं है - यह बजरंग बाण की वह शक्ति है जो हर बाधा को चूर-चूर कर देती है। हनुमान जी की कृपा से बड़ी से बड़ी बाधा भी क्षणों में समाप्त हो जाती है।

कितने दिन करें?

* 11 दिन - सामान्य बाधाओं के लिए
* 21 दिन - गहरी बाधाओं, पितृ दोष, तांत्रिक प्रभाव के लिए
* 40 दिन - अत्यंत गंभीर समस्याओं के लिए

शुरू किस दिन करें?

* मंगलवार - सबसे उत्तम (हनुमान जी का दिन)
* शनिवार - बहुत अच्छा (संकटमोचन का दिन)
* रविवार - अच्छा (सूर्य का दिन, ऊर्जा देने वाला)

पूरे साधना काल के नियम: करें यह काम:

1. सूर्य देव को जल देना - अनिवार्य! रोज सुबह तांबे के बर्तन से सूर्य को जल अर्पित करें। इससे ऊर्जा का संचार होता है।

2. भूमि शयन - जमीन पर सोएँ, यह संयम को बढ़ाता है।

3. ब्रह्मचर्य का पालन - पूरे साधना काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य रखें। यह ऊर्जा को संचित करता है।

4. लाल वस्त्र - लाल रंग के कपड़े पहनें (हनुमान जी को प्रिय)।

5. लाल आसन - लाल रंग के आसन पर बैठें।

6. दिशा - दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठें (यह दिशा हनुमान जी और भैरव की है)।

साधना काल में ध्यान देने योग्य बातें:

1. नमक का त्याग - कोशिश करें कि भोजन में नमक ना लें। अगर बिल्कुल नहीं लेना मुश्किल हो तो सीमित मात्रा में लें। नमक तामसिक तत्व को बढ़ाता है।

2. तामसिक चीजें - मांस-मदिरा, प्याज-लहसुन, तामसिक भोजन का पूर्ण त्याग करें।

3. ब्रह्मचर्य - इसका विशेष ध्यान रखें। यह साधना की सफलता की कुंजी है।

प्रयोग की विधि:

* चरण 1: तैयारी
* सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठें (4-5 बजे)
* स्नान करें, स्वच्छ लाल वस्त्र पहनें
* लाल आसन बिछाएँ
* दक्षिण दिशा की ओर मुख करें
* चरण 2: दीपक जलाएँ
* चमेली का तेल या सरसों का तेल
* लाल रंग का दीपक हो तो बेहतर
* दीपक जलाकर हनुमान जी का ध्यान करें
* ध्यान करें कि हनुमान जी आपके सामने विराजमान हैं
* चरण 3: संकल्प लें

हाथ में जल लेकर संकल्प करें: ₹ॐ संकल्पं करिष्ये। मैं (अपना नाम, गोत्र) अपनी (शत्रु/तंत्र/पितृ) बाधा से मुक्ति के लिए 11/21 दिनों तक नियमपूर्वक 51 बार बजरंग बाण का पाठ करूँगा। हे हनुमान जी! मेरी साधना स्वीकार करें। प्रसन्न होकर मेरे सब कष्ट दूर करें।₹ जल को जमीन पर छोड़ दें।

* चरण 4: सीता राम जप
* सबसे पहले एक माला (108 बार) ₹सीता राम₹ का जप करें
* ₹सीता राम, सीता राम, सीता राम₹ का उच्चारण करें
* इससे वातावरण शुद्ध होता है और हनुमान जी प्रसन्न होते हैं
* चरण 5: बजरंग बाण का 51 बार पाठ
* अब 51 बार बजरंग बाण का पाठ शुरू करें
* 51 बार यानी 51 बार पूरा बजरंग बाण पढ़ना है
* हर बार के बाद थोड़ा रुकें, हनुमान जी का ध्यान करें
* पाठ पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ करें

नोट: बजरंग बाण एक बार पढ़ने में करीब 5-7 मिनट लगते हैं। 51 बार यानी करीब 4-5 घंटे। अगर इतना संभव ना हो तो 21 बार या 11 बार भी कर सकते हैं। लेकिन 51 बार का विशेष महत्व है।

* चरण 6: सूर्य अर्घ्य
* सुबह सूर्योदय के बाद सूर्य देव को जल अवश्य चढ़ाएँ
* तांबे के बर्तन में जल, लाल फूल, रोली, अक्षत डालें
* सूर्य मंत्र ₹ॐ सूर्याय नमः₹ बोलते हुए जल चढ़ाएँ
* यह बहुत जरूरी है - सूर्य की ऊर्जा साधना को बल देती है

* सूर्य देव से प्रार्थना करे साधना ने सफलता हेतु

मुख्य प्रयोग (साधना के आखिरी दिन):

11वें या 21वें दिन साधना पूरी होने के बाद यह मुख्य प्रयोग करें। यह प्रयोग सबसे महत्वपूर्ण है - इसे ध्यान से समझें।

सामग्री इकट्ठा करें:

* गाय का घी
* गाय के कंडे - 11 (सूखे हों)
* काली मिर्च - 11
* पीली सरसों - 1 चम्मच
* इलाइची - 11
* पिप्पल (पिपरी) - 11 (मिल जाए तो, न मिले तो केवल काली मिर्च-सरसों से भी काम चल जाता है)

प्रयोग विधि:

1. 11वें दिन की साधना - पहले 51 बार बजरंग बाण का पाठ करें (जैसे रोज करते थे)

2. सामग्री का अभिमंत्रण - पाठ करते समय सारी सामग्री (काली मिर्च, सरसों, इलाइची, पिप्पल) अपने पास एक लाल कपड़े पर रखें। हर पाठ के बाद सामग्री पर फूंक मारें (हनुमान जी की कृपा का आह्वान करें)।

3. 51 पाठ पूरे होने के बाद - अब इस अभिमंत्रित सामग्री को गाय के कंडे में मिला दें।

4. हवन की तैयारी - किसी शुभ स्थान पर (घर में या मंदिर में) अग्नि प्रज्वलित करें।

5. आहुति दें - अब इस मिश्रण को आहुति के रूप में अग्नि में डालें। प्रत्येक आहुति डालते समय बोलें:

बजरंग बाण पढ़ते हुए

* कुल 11 आहुतियाँ दें या 5 दे और हर 3 दिन मे एक बार हवन करे जब तक समस्या का अंत ना हो
* आहुति देते समय ध्यान करें कि आपकी सभी बाधाएँ अग्नि में भस्म हो रही हैं

1. हवन पूर्ण होने पर - हवन के बाद हनुमान चालीसा का 11 बार पाठ करें।

2. प्रसाद वितरण - हवन का प्रसाद (बूंदी, चना आदि) सभी में बाँटें।

पूर्ण सुरक्षा हेतु यह प्रयोग: यह प्रयोग आपकी पूर्ण सुरक्षा के लिए है। जब भी लगे कि बाधाएँ बहुत बढ़ गई हैं, कोई नकारात्मक शक्ति आपको घेर रही है, यह प्रयोग करें।

कैसे काम करता है यह प्रयोग? (थोड़ा सा विज्ञान)

1. ध्वनि कंपन का प्रभाव:- बजरंग बाण में ऐसे शब्द हैं जो नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करते हैं। 51 बार पाठ करने से यह कंपन इतना प्रबल हो जाता है कि वातावरण की हर नकारात्मकता समाप्त हो जाती है।

2. तप और संयम की शक्ति 11 दिन का ब्रह्मचर्य, भूमि शयन, नमक त्याग - ये सब आपकी ऊर्जा को अद्भुत रूप से बढ़ाते हैं। यह ऊर्जा ही आपकी रक्षा करती है।

3. मंगल और शनि का प्रभाव मंगलवार या शनिवार से शुरू करने से ग्रहों की अनुकूलता मिलती है। मंगल शत्रुओं का नाश करता है, शनि कर्मों का फल देता है।

4. आहुति का रहस्य अभिमंत्रित सामग्री को आहुति देने से आपकी साधना की ऊर्जा अग्नि के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड में फैल जाती है। अग्नि देव आपकी साधना को सीधे हनुमान जी तक पहुँचाते हैं।

महत्वपूर्ण सुझाव:

* करें:
* पूरे 11/21 दिन लगातार करें (बीच में न छोड़ें)
* एक ही समय पर करें
* विश्वास और श्रद्धा से करें
* सूर्य देव को जल देना न भूलें
* आखिरी दिन हवन जरूर करें

*** ना करें:**

* साधना के दिनों में किसी से झगड़ा नहीं करें
* नकारात्मक लोगों से दूर रहें
* मांस-मदिरा, प्याज-लहसुन का त्याग करें
* बाल-नाखून न कटवाएँ (यदि संभव हो)

भोग क्या लगाएँ?

* लाल बूंदी (हनुमान जी को अतिप्रिय)
* चने (भिगोए हुए)
* गुड़
* लाल फूल (गुड़हल)
* सिन्दूर

कहाँ करें साधना?

* घर के पूजा स्थल पर (साफ-स्वच्छ स्थान)
* हनुमान मंदिर में (बहुत उत्तम)
* शिव मंदिर में
* नदी के किनारे (यदि संभव हो)

थोड़ा सा होश और साक्षी भाव: इस साधना को करते समय थोड़ा सा होश रखिए। देखिए कि कैसे बाधाएँ दूर हो रही हैं, कैसे ऊर्जा बढ़ रही है। मंत्रों को यंत्रवत न दोहराएँ। हर शब्द को महसूस करें। हर पाठ के साथ हनुमान जी की उपस्थिति को अनुभव करें।

हवन करते समय देखिए - अग्नि कैसे आपकी बाधाओं को जला रही है, कैसे नकारात्मकता भस्म हो रही है। बस देखते रहिए। साक्षी बने रहिए। जब साक्षी भाव आएगा, तो यह साधना और भी गहरा असर दिखाएगी।

अंतिम बात: बजरंग बाण से बड़ा कोई संकटमोचन नहीं। हनुमान जी की कृपा से कोई बाधा टिक नहीं सकती। यह साधना उनकी असीम कृपा पाने का सबसे सरल मार्ग है।

11 दिन की इस साधना के बाद आप खुद महसूस करेंगे कि जीवन से बोझ उतर गया, बाधाएँ समाप्त हो गईं और हर तरफ सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो गया।

हनुमान जी की कृपा से शत्रु नष्ट होते हैं, तंत्र समाप्त होता है, पितृ शांत होते हैं और जीवन में सुख-शांति आती है।

जन समस्याओं के त्वरित समाधान को लेकर प्रशासन सजग : डीसी

- प्रत्येक शिकायत का निष्पक्ष, पारदर्शी समाधान सुनिश्चित करें अधिकारी
- जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक में 14 शिकायतों का मौके पर निपटारा

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 27 फरवरी। जिला मुख्यालय स्थित संवाद भवन में शुक्रवार को उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल की अध्यक्षता में जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। डीसी ने बैठक के दौरान नागरिकों से प्राप्त शिकायतों की विस्तार से सुनवाई करते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए, ताकि समस्याओं का समाधान समयबद्ध रूप से सुनिश्चित किया जा सके। बैठक में कुल 18 शिकायतें प्रस्तुत की गई, जिनमें से 14 शिकायतों का मौके पर ही समाधान कर दिया गया, जबकि शेष शिकायतों के निस्तारण के लिए संबंधित विभागों को निर्धारित समयावधि में समाधान के निर्देश दिए।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठकें शासन-प्रशासन और आमजन के बीच संवाद स्थापित करने का प्रभावी मंच हैं, जिनके माध्यम से नागरिक अपनी समस्याएं सीधे प्रशासन के समक्ष रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन का प्रयास है कि प्रत्येक शिकायत का निष्पक्ष, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित किया जाए, ताकि नागरिकों को राहत मिल सके।

उपायुक्त ने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे मामलों की नियमित मॉनिटरिंग करें तथा शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर निपटाएं। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि शिकायतकर्ता को समाधान प्रक्रिया की जानकारी समय-समय पर दी जाए, ताकि प्रशासन के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत हो।

उन्होंने कहा कि प्रशासन की प्राथमिकता है कि नागरिकों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अनावश्यक रूप से कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें और एक ही मंच पर उनकी सुनवाई तथा समाधान सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की बैठकें सुशासन की अवधारणा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

बैठक में यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर डीसीपी अमित दहिया, डीसीएफ साहिती रेड्डी, एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, सीटीएम नमिता कुमारी, सीजीजीए खुशी कौशल, डीआरओ मनवीर सिंह, जनस्वास्थ्य विभाग के अधीक्षण अभियंता अमित श्योकंद, सिंचाई विभाग के एसई सतीश जनावा, सिविल सर्जन डॉ मंजू कादयान, एक्सईएन पीडब्ल्यूडी सुमित कुमार, एक्सईएन जनस्वास्थ्य विभाग अश्विनी सांगवान, सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

लक्ष्य निर्धारित कर निरंतर प्रयासरत रहें छात्र : डीसी

- छात्र जीवन में की गई मेहनत से मजबूत बनती भविष्य की नींव - बोले डीसी
- डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने प्रतिभा मंथन छात्रवृत्ति सम्मान समारोह में मेधावी विद्यार्थियों को किया सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 27 फरवरी। लघु सचिवालय सभागार में शुक्रवार की सायं प्रतिभा मंथन छात्रवृत्ति सम्मान समारोह का आयोजन किया, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। इससे पहले डीईओ रतिंद्र सिंह ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और जिला में चल रहे प्रतिभा मंथन कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि प्रतिभा मंथन स्कॉलरशिप कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचान देना और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि छात्र जीवन में की गई मेहनत ही भविष्य की मजबूत नींव बनाती है। विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित कर निरंतर प्रयास करना चाहिए, सफलता अवश्य मिलती है। उन्होंने बताया कि प्रतिभा मंथन जैसी योजनाएं विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना के साथ आत्मविश्वास भी बढ़ाती हैं। उन्होंने कहा कि प्रतिभा मंथन टीम पिछले वर्षों से बच्चों का रूचि अनुसार मार्गदर्शन कर रही है, जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं, ऐसे में हमें प्रतिभा मंथन 2-0 की तरफ बढ़ना चाहिए। उन्होंने प्रतिभा मंथन के लिए पोर्टल बनाने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि यह जिला के लिए अच्छी पहल है।

उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे पढाई के साथ साथ जीवन में नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी अपने जीवन में अपनाएं। उन्होंने अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों की सफलता में उनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। कार्यक्रम के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। डीसी ने प्रतिभा मंथन टीम से मुस्तफा सहित अन्य सदस्यों द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए बधाई दी।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, सीटीएम नमिता कुमारी, सीजीजीए खुशी कौशल सहित शिक्षा विभाग के अधिकारी, प्रतिभा मंथन टीम, अभिभावक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एग्रीस्टैक फार्मर आईडी से ही पीएम किसान सम्मान निधि योजना का लाभ संभव : डीसी

- डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों की बैठक में की एग्री स्टेक फार्मर आईडी कार्यक्रम की समीक्षा

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 27 फरवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिला में इन दिनों एग्री स्टैक फार्मर आईडी बनाने का कार्य जारी है, ऐसे में प्रत्येक किसान के लिए एग्रीस्टैक फार्मर आईडी बनवाना अनिवार्य है। पीएम किसान सम्मान निधि सहित सभी कृषि एवं किसान कल्याण से जुड़ी सरकारी योजनाओं का लाभ इसी आईडी के माध्यम से प्रदान किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गांवों में विशेष अभियान चलाकर किसानों की फार्मर आईडी जनरेट करवाई जाए तथा इस कार्य की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

उपायुक्त शुक्रवार को आयोजित अधिकारियों की बैठक में एग्रीस्टैक फार्मर आईडी, राजस्व, विकास एवं पंचायत विभाग से संबंधित कार्यक्रमों की समीक्षा कर रहे थे। बैठक के दौरान उन्होंने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के तकनीकी अधिकारी डा रोहित वत्स से जिले में चल रहे फार्मर आईडी निर्माण कार्य की जानकारी लेते हुए इसमें तेजी लाने के निर्देश दिए।

उपायुक्त ने कहा कि एग्री स्टैक फार्मर आईडी प्रत्येक किसान के लिए अनिवार्य है, इसके लिए आबादी के अनुरूप सर्वप्रथम बड़े गांवों को चिंहित करते हुए आईडी जैनरेट की जाए ताकि निर्धारित समय सीमा में अधिक से अधिक किसानों की एग्रीस्टैक आईडी तैयार की जा सके।

फार्मर आईडी से मिलेंगे ये प्रमुख लाभ

उपायुक्त ने बताया कि एग्रीस्टैक फार्मर आईडी का मुख्य उद्देश्य किसानों की पहचान को सुरक्षित करना तथा उन्हें सरकारी सेवाओं और योजनाओं का सीधा लाभ उपलब्ध कराना है। भविष्य में बैंक ऋण, पीएम किसान सम्मान निधि आदि का लाभ एग्रीस्टैक फार्मर आईडी के माध्यम से ही दिया जाएगा। इसके लिए सभी संबंधित अधिकारी मिशन मोड में कार्य करें।

इन दस्तावेजों से बनेगी फार्मर आईडी

एग्रीस्टैक आईडी बनवाने के लिए किसान को मोबाइल नंबर से लिंक आधार कार्ड, पिछली फसल के लिए मेरी फसल मेरा ब्यौरा पंजीकरण की प्रति अथवा जमीन से संबंधित फर्द साथ लानी होगी। किसान स्वयं सेल्फ रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं, वहीं सीएससी केंद्रों के माध्यम से भी फार्मर आईडी जनरेट कराई जा सकती है।

बैठक में ये अधिकारी रहे उपस्थित

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर आईएएस अंकित कुमार चोकसे, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, सीटीएम नमिता कुमारी, सीएमजीजीए खुशी कौशल, डीआरओ मनबीर सिंह सांगवान, डीआईओ अमित बंसल, डीडीपीओ निशा तंवर सहित सभी तहसीलदार व बीडीपीओ उपस्थित रहे।

झज्जर जिला में 1 मार्च से 24 मार्च तक चलेगा विशेष कानूनी जागरूकता अभियान

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर केंद्रित रहेगा अभियान
सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने दी जानकारी

झज्जर, 27 फरवरी। सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण झज्जर के सचिव विशाल ने बताया कि राष्ट्रीय वार्षिक कार्य योजना के अनुपालन में 1 मार्च से जिला के चिन्हित गांवों में विशेष कानूनी जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। इस अभियान के अंतर्गत पैरा लीगल वालंटियर गांवो में पात्र व्यक्तियों को निशुल्क विधिक सहायता, परामर्श और अधिकारों संबंधी विस्तृत जानकारी प्रदान करेंगे।

उन्होंने बताया कि यह अभियान महिला कैदियों और वृद्ध कैदियों के लिए न्याय और सम्मान पहल, मानव-वन्यजीव संघर्ष (एचडब्ल्यूसी) के पीड़ितों को न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करने तथा बौद्धिक अक्षमता वाले व्यक्तियों को बेहतर कानूनी सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से चलाया जाएगा।

प्राधिकरण के सचिव ने बताया कि यह अभियान राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (एनएएलएसए) की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर केंद्रित रहेगा। इसके तहत पात्र व्यक्तियों को निःशुल्क विधिक सहायता, परामर्श और अधिकारों संबंधी विस्तृत जानकारी प्रदान की जाएगी, ताकि समाज के कमजोर और वंचित वर्ग न्याय प्रणाली से सीधे जुड़ सकें।

सचिव विशाल ने बताया कि जागरूकता शिविरों में प्राधिकरण से जुड़े पैरा लीगल वालंटियर (पीएलवी) निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गांव-गांव जाकर लोगों को कानूनी अधिकारों, निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया, पीड़ित मुआवजा योजनाओं तथा विशेष श्रेणियों के लिए उपलब्ध कानूनी प्रावधानों की जानकारी देंगे।

सीजेएम विशाल ने 24 मार्च तक चलने वाले कानूनी जागरूकता अभियान की जानकारी देते हुए बताया कि 1 मार्च को पीएलवी शिवधन गांव औरंगपुर, 2 मार्च को गांव बिरधाना में पीएलवी प्रेमवती, 3 मार्च को गांव दहकोरा में पीएलवी नीता देवी, 4 मार्च को गांव छोछी में पीएलवी सरोज देवी और 5 मार्च को गांव देसलपुर में आयोजित विशेष अभियान में पीएलवी नेहा रानी कानूनी जानकारी देंगी।

उन्होंने बताया कि 6 मार्च को गांव गंगटान में आयोजित कार्यक्रम में पीएलवी नवीन कुमारी, 7 मार्च को गांव कोका में पीएलवी रोशनी, 8 मार्च को गांव रेढूवास में पीएलवी बबीता कुमारी, 9 मार्च को गांव महराना में पीएलवी शिवधन व 10 मार्च को गांव दीमाना में आयोजित अभियान में पीएलवी प्रेमवती की अध्यक्षता रहेगी। सभी पीएलवी चिन्हित गांवो में पात्र नागरिकों को कानूनी सेवाओं की जानकारी देंगे।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल में बताया कि 11 मार्च को गांव रोहद में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में पीएलवी नीता देवी, 12 मार्च को गांव मलिकपुर में पीएलवी सरोज देवी, 13 मार्च को गांव इस्माइलपुर में पीएलवी नेहा रानी, 14 मार्च को गांव गोधड़ी में पीएलवी नवीन कुमारी व 15 मार्च को गांव किलरोध में पीएलवी रोशनी पात्र नागरिकों को कानूनी सेवाओं से सम्बंधित जानकारी प्रदान करेंगी।

इसी प्रकार 16 मार्च को गांव खापडवास में पीएलवी बबीता कुमारी, 17 मार्च को गांव खखाना में पीएलवी शिवधन, 18 मार्च को गांव वाजिदपुर में पीएलवी प्रेमवती, 19 मार्च को गांव मांडोठी में पीएलवी नीता देवी और 20 मार्च को गांव ढराना में आयोजित कैम्प में पीएलवी सरोज देवी कानूनी जानकारी प्रदान करेंगी।

सीजेएम विशाल ने बताया कि 21 मार्च को गांव जैतपुर में आयोजित कानूनी जागरूकता शिविर में पीएलवी नेहारानी, 22 मार्च को गांव बाघपुर में पीएलवी नवीन कुमारी, गांव पटासनी में 23 मार्च को पीएलवी रोशनी और 24 मार्च को गांव चढ़वाना में आयोजित कार्यक्रम में पीएलवी बबीता कुमारी पात्र नागरिकों को कानूनी सेवाओं की जानकारी देंगी।

उन्होंने कहा कि इस विशेष जागरूकता अभियान का मुख्य उद्देश्य न्याय तक समान पहुंच सुनिश्चित करना और समाज के कमजोर वर्गों में कानूनी जागरूकता बढ़ाना है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि अधिक से अधिक पात्र व्यक्ति इन योजनाओं का लाभ उठाएं और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनें।

जल संचय -जन भागीदारी 2.0 के लक्ष्यों को समयबद्ध पूरा करें विभाग : डीसी

- डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अधिकारियों की बैठक में की जल संचय - जन भागीदारी कार्यक्रम की समीक्षा

झज्जर, 27 फरवरी। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जल शक्ति अभियान तथा जल संचय जनभागीदारी 2.0 अभियान की प्रगति को लेकर अधिकारियों की समीक्षा बैठक में स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध पूरा करें। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है और इसे जन-आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। इस बीच अभियान के नोडल अधिकारी ने विस्तार से जानकारी दी।

डीसी ने अधिकारियों से कहा कि जिले में वर्षा जल संचयन, तालाबों के पुनर्जीवन, चेक डैम, सोक पिट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर तथा अन्य जल संरक्षण कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में चिन्हित कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए और प्रगति रिपोर्ट समय-समय पर प्रस्तुत की जाए। उन्होंने कहा कि अभियान के तहत किए गए कार्य की रिपोर्ट को भी पोर्टल पर अपलोड करें।

बैठक में डीसी ने जनभागीदारी पर विशेष बल देते हुए कहा कि आमजन, स्वयं सहायता समूहों, ग्राम पंचायतों, शैक्षणिक संस्थानों व सामाजिक संगठनों को अभियान से जोड़ा जाए, ताकि जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़े और स्थायी परिणाम सामने आएं। उन्होंने कहा कि जल बचत के लिए व्यवहार में बदलाव लाना भी उतना ही जरूरी है, जितना संरचनात्मक कार्य।

डीसी ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि प्रचार-प्रसार गतिविधियों को और प्रभावी बनाया जाए, ताकि अधिक से अधिक लोग जल संचय के महत्व को समझें और अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि लापरवाही किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं की जाएगी और सभी अधिकारी अपने-अपने दायित्वों का गंभीरता से निर्वहन करें।

बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने अभियान के तहत अब तक किए गए कार्यों की जानकारी दी तथा आगामी कार्य योजना पर भी चर्चा की। डीसी ने आशा जताई कि सामूहिक प्रयासों से जिले में जल संरक्षण के क्षेत्र में सकारात्मक व स्थायी बदलाव देखने को मिलेगा।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, डीसीएफ साहिती रेड्डी, सीटीएम नमिता कुमारी, डीडीपीओ निशा तंवर, जनस्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन अश्वनी सांगवान, लोक निर्माण विभाग के एक्सईएन सुमित कुमार सहित सम्बन्धित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

"शिल्प समागम केवल मेला नहीं, आत्मनिर्भरता और सम्मान का सेतु है": डॉ. वीरेंद्र कुमार ने 'शिल्प समागम–2026' का उद्घाटन किया

संगिनी घोष

मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने शिल्प समागम–2026 का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह आयोजन केवल एक व्यापारिक मेला नहीं, बल्कि कारीगरों को आत्मनिर्भरता, सम्मान और स्थायी आजीविका से जोड़ने वाला सशक्त सेतु है। इस अवसर पर देशभर से आए शिल्पकारों, स्वयं सहायता समूहों और उद्यमियों ने पारंपरिक एवं आधुनिक हस्तशिल्प उत्पादों का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि ऐसे मंच कारीगरों को सीधे उपभोक्ताओं और बाजार से जोड़ते हैं, जिससे उन्हें उचित मूल्य, पहचान और नए अवसर प्राप्त होते हैं। उन्होंने पारंपरिक कौशल को आधुनिक तकनीक, डिज़ाइन नवाचार, ब्रांडिंग और डिजिटल विपणन से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि भारतीय शिल्प को व्यापक पहुंच मिल सके।

यह आयोजन आत्मनिर्भर भारत की व्यापक सोच से भी जुड़ा हुआ है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना और स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन देना है। मेले में हस्तशिल्प, हथकरघा, प्राकृतिक उत्पाद और जनजातीय कला प्रमुख आकर्षण रहे, जिन्होंने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित किया।

डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि शिल्पकार देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षक हैं और उन्हें सम्मान तथा अवसर प्रदान करना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने समावेशी विकास की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि समाज के वंचित और ग्रामीण वर्गों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक है।

ऐसे देखें तो, 'शिल्प समागम–2026' केवल एक व्यापारिक आयोजन नहीं, बल्कि सशक्तिकरण, संस्कृति संरक्षण और सम्मान का प्रतीक बनकर उभरा है।

डिजिटल मेटा विवरण (SEO):

डॉ. वीरेंद्र कुमार ने 'शिल्प समागम–2026' का उद्घाटन कर इसे आत्मनिर्भरता, कारीगर सशक्तिकरण और समावेशी आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण मंच बताया।

समाधान शिविर की शिकायतों का समयबद्ध निपटान जरूरी : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

– समाधान शिविर की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने दिए निर्देश

झज्जर, 27 फरवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि आमजन से जुड़ी प्रत्येक समस्या का समयबद्ध निपटान करना प्रशासन की पहली प्राथमिकता है। ऐसे में अधिकारी जनसमस्याओं का तत्परता से निपटारा करें। डीसी शुक्रवार को समाधान शिविर की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे रहे थे।

डीसी ने बताया कि जिला में आयोजित हो रहे समाधान शिविरों में अभी तक कुल 5654 शिकायत प्राप्त हुई हैं इनमें से केवल 140 पेंडिंग हैं। पेंडिंग शिकायतों का निवारण प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है।

उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि वे समाधान शिविर, सीएम विंडो, जनसंवाद आदि माध्यमों से प्राप्त सभी शिकायतों की रिपोर्ट निर्धारित समय सीमा में पोर्टल पर अपलोड करना सुनिश्चित करें। उन्होंने जनस्वास्थ्य, पुलिस, सिंचाई, पंचायत, राजस्व, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, एचएसवीपी, पीडब्ल्यूडी तथा शिक्षा विभाग से जुड़ी समस्याओं का विभागवार आकलन करते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी विभाग समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करें तथा समय पर पोर्टल पर एटीआर अपलोड करें।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, सीटीएम नमिता कुमारी, एसीपी अनिरुद्ध चौहान, डीडीपीओ निशा तंवर, जनस्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन अश्वनी सांगवान, लोक निर्माण विभाग के एक्सईएन सुमित कुमार सहित विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

दूरियाँ मिटाने का प्रयास...!

तुम आए तो आया हैं 'मुझे' सब याद,
यूंहीं तुमने की थी आने की फरियाद।
कस्मे तो तुम ही खाते रहें न आने की,
हमने कभी बात नहीं की हैं जाने की।

सिहर उठता है 'मन' पिछली यादों से,
जोशीलें संवाद, हरकतों एवं इरादों से।
क्या? हस्ती बनी दुनिया की नजरों में,
नज़रें नीची हो गई 'खुद' की नजरों में।

यूं करिए दूरियों को मिटाने का प्रयास,
जिसका सभी को हो भरपूर आभास।
धुल जाए पिछले 'ग़लत' हुए व्यवहार,
याद रखो यहीं तो है तुम्हारे पालनहार।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर–452011 (मध्य प्रदेश)

मथुरा में हीट वेव से निपटने की तैयारी सिटी हीट एक्शन प्लान पर ज़ोर

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। भीषण गर्मी और लू के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व डॉ. पंकज कुमार की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने 'सिटी हीट एक्शन प्लान' के तहत ठोस कदम उठाने की रणनीति तैयार की है। जिला आपदा विशेषज्ञ पूजा राणा द्वारा सुझाई गई त्रिस्तरीय रणनीति के अनुसार, शहर में लू से बचाव के लिए अल्पकालिक, मध्यकालिक और दीर्घकालिक योजनाओं पर काम किया जाएगा। प्रशासन ने निर्णय लिया है कि मार्च के अंत तक सभी प्रमुख सरकारी भवनों और संस्थानों की छतों को 'कूल रूफ' तकनीक के तहत सफेद रंग से रंगा जाएगा, ताकि इमारतों के भीतर के तापमान को कम रखा जा सके। ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को कम करने के लिए शहर में 'ग्रीन बेल्ट' के विस्तार पर जोर दिया जा रहा है, जिसमें स्थानीय नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। जिला आपदा विशेषज्ञ पूजा राणा ने स्थानीय स्तर पर की गई तैयारियों की जानकारी देते हुए बताया कि स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलाकर अभिभावकों और लोगों को जागरूक किया जाएगा। बैठक के दौरान जनपद के समस्त वरिष्ठ अधिकारी एवं आपदा मित्र अशोक यादव, अमित वर्मा, आपदा बाबू दीपू ,अरुण कुमार, शुभम कुमार आदि मुख्य रूप से मौजूद रहे और आपदा मित्र एवं मास्टर ट्रेनर्स के माध्यम से आम जनमानस को हीट स्ट्रोक से बचाव व प्राथमिक उपचार के गुर सिखाने की रणनीति साझा की।

कानपुर पुलिस से मुठभेड़ में लाखों लूटने वाले दो शातिर गिरफ्तार : असलहे और नकदी बरामद

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां की कमिश्नरेट पुलिस आजकल लुटेरों के पीछे पड़ी है। उसने उसने चकेरी थाना क्षेत्र में मुठभेड़ के दौरान दूध शातिर लुटेरों को भी गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से लूटी गई लाखों की नकदी भी बरामद हुई है। वहीं दोनों घायल बदमाशों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जिसके बाद उन्हें जेल भेजा जाएगा।

पुलिस कमिश्नर रघुबीर लाल ने यहां पत्रकारों को बताया कि लूट की यह वारदात चकेरी थाना क्षेत्र के श्याम नगर में हुई थी। यहां पर श्यामनगर चौकी से कुछ दूरी पर कट्टे की बट मारकर बाइक सवार से नकदी से भरा बैग लूट लिया गया था। इसी घटना में गुरुवार देर रात पुलिस ने मुठभेड़ में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों घायल बदमाशों को कांशीराम अस्पताल में भर्ती कराया है।

यह भी अवगत कराते चलें कि इस घटना में पुलिस ने आठ दिन बाद बीते बुधवार को रिपोर्ट दर्ज की थी। चकेरी थाना प्रभारी अजय प्रकाश के मुताबिक 16 फरवरी की शाम को यशोदानगर निवासी वासिद अपने साथी अदशद के साथ बाइक से बैंक से नकदी निकाल बैग में लेकर जा रहा था।

इसी दौरान शताब्दी उद्यान के पास मोड़ पर दो बाइक सवार चार बदमाशों ने वासिद और उसके दोस्त को पीटा था। कट्टे की बट मारकर नकदी से भरा बैग लूटकर फरार हो गए थे। पीड़ति ने उस समय घटना से इनकार किया था। लेकिन बाद मेंपीड़ित ने तहरीर देकर चकेरी थाने में लूट की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। सूचना के आधार पर पुलिस ने गुरुवार रात को अहिरवां के अस्सी फिट रोड पर घेराबंदी कर बाइक सवार दो आरोपियों को पकड़ने का प्रयास किया। इस पर उन लोगों ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में दोनों आरोपियों के पैर पर गोली लगी है। पुलिस कमिश्नर रघुबीर लाल ने बताया कि पूछताछ में आरोपियों ने नाम बेकनगंज निवासी यासीन और मुजाहिद पता चले हैं। वहीं कुछ अन्य सूत्रों के मुताबिक घटना में 24 लाख की नकदी लूटी गई थी। अब पुलिस गिरफ्तार बदमाशों के फरार साथियों की तलाश कर रही है।

क्वेस्ट एलायंस की शीतल गोस्वामी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान पानीपत (महिला) में दो दिवसीय स्वयंरोजगार कार्यक्रम संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/ हिसार (राजेश सलूजा): राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (महिला) पानीपत में 24 फरवरी से 25 फरवरी 2026 तक क्वेस्ट एलायंस की ओर से दो दिवसीय स्वयंरोजगार कार्यक्रम के अंतर्गत स्टॉल गतिविधि का सफल आयोजन किया गया। इस आयोजन की विशेष बात यह रही कि यह पूरी तरह प्रशिक्षुओं द्वारा संचालित पहल थी तथा इसके लिए क्वेस्ट एलायंस की ओर से किसी प्रकार का बजट व्यय नहीं किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को स्वरोजगार, उद्यमिता तथा व्यावहारिक व्यावसायिक अनुभव प्रदान करना था। संस्थान के सभी ट्रेड की प्रशिक्षुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दोनों दिनों में प्रत्येक स्टॉल पर अलग-अलग व्यावसायिक विचार प्रस्तुत किए गए, जिससे रचनात्मकता और नवाचार की झलक देखने को मिली।

स्टॉलों पर लिट्टी चोखा, भेलपुरी, दही भल्ले, छोला चाट, ब्रेड पिज़्ज़ा, चाय, नाखून सज्जा सेवा, मेहंदी कला, हस्तनिर्मित रूमाल, पर्स, की-रिंग्स सहित विभिन्न उत्पाद एवं सेवाएँ उपलब्ध कराई गईं। सभी प्रशिक्षुओं ने स्वयं निवेश कर अपने स्टॉल लगाए और सराहनीय रूप से अपनी लागत से अधिक लाभ अर्जित किया।

इस गतिविधि के माध्यम से प्रशिक्षुओं को वास्तविक बाजार का अनुभव प्राप्त हुआ। उन्होंने निवेश योजना, मूल्य निर्धारण रणनीति, ग्राहक व्यवहार, संवाद कौशल, लाभ की गणना तथा स्थायित्व जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को व्यवहारिक रूप से समझा। इस अनुभव ने उनके आत्मविश्वास को सशक्त किया और उन्हें सफल उद्यमी बनने की दिशा में प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत क्वेस्ट एलायंस की ओर से शीतल गोस्वामी मैडम ने स्वयंरोजगार विषय पर प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान दिए गए सुझावों के आधार पर ही प्रशिक्षुओं ने अपने स्टॉल की रूपरेखा तैयार की और उन्हें सफलतापूर्वक संचालित किया।

यह दो दिवसीय आयोजन "करते हुए सीखना" की अवधारणा का उत्कृष्ट उदाहरण सिद्ध हुआ। यह पहल न केवल आर्थिक समझ विकसित करने में सहायक रही, बल्कि नवाचार, टीमवर्क और समस्या समाधान की क्षमता को भी सुदृढ़ बनाने का प्रभावी माध्यम बनी।

दिल्ली आबकारी नीति आरोपी बरी प्रकरण- न्यायिक जवाबदेही अभियोजन की गुणवत्ता और राजनीतिक आरोप- प्रत्यारोप की सीमाओं पर उठते वैश्विक प्रश्न-एक समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया
महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत सहित पूरी दुनियाँ के लगभग सभी लोकतांत्रिक देशों में आपराधिक न्याय प्रणाली बहु- स्तरीय, जटिल और प्रक्रिया- प्रधान होती है। निचली अदालतों से लेकर उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय तक, हर स्तरपर साक्ष्य, गवाह, परिस्थितिजन्य तथ्य, अभियोजन की दलीलें और बचाव पक्ष की आपत्तियाँ विस्तार से परखी जाती हैं।यह प्रक्रिया विधि- राज (रूल ऑफ़ लॉ) की रक्षा के लिए आवश्यक है, परंतु इसकी लंबी अवधि अक्सर आरोपित व्यक्ति के जीवन का बहुमूल्य समय निगल जाती है।जब कोई व्यक्ति वर्षों तक मुकदमे और कारावास झेलने के बाद अंततः निर्दोष सिद्ध होता है, तब मूल प्रश्न उठता है उसके बीते हुए समय, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक क्षति और मानसिक आघात की भरपाई कौन करेगा?27 फरवरी 2026 को दिल्ली की राउज एवेन्यू अदालत द्वारा दिल्ली आबकारी नीति मामले में अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया सहित 23 आरोपितों को बरी किए जाने के बाद यह प्रश्न और तीव्रता से उभरा है।अदालत ने कहा कि अभियोजन का मामला ठोस साक्ष्यों पर आधारित नहीं था और साजिश की थ्योरी अनुमानात्मक थी। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि यह फैसला केवल एक आपराधिक मुकदमे का अंत नहीं, बल्कि न्यायिक जवाबदेही, अभियोजन की गुणवत्ता और राजनीतिक आरोप- प्रत्यारोप की सीमाओं पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय विमर्श का महत्वपूर्ण सटीक प्रारंभ बिंदु बन गया है।

साथियों बात अगर हम दिल्ली आबकारी नीति मामले में न्यायालय की प्रमुख टिप्पणियों क़ो समझने की करें तो राउज एवेन्यू अदालत ने हजारों पन्नों की चार्जशीट का विश्लेषण करते हुए पाया कि आरोप गवाहों और दस्तावेजी साक्ष्यों से पुष्ट नहीं होते।अदालत ने कहा कि आबकारी नीति के निर्माण में व्यापक साजिश या आपराधिक मंशा सिद्ध नहीं हुई।विशेष रूप से, अदालत ने यह भी कहा कि संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्ति का नाम बिना ठोस प्रमाण जोड़ा जाना विधि- सिद्धांतों के विरुद्ध है।मुख्य आरोपी बताए गए कुलदीप सिंह के विरुद्ध भी कोई ठोस सामग्री न मिलने पर उन्हें बरी किया गया। मीडिया में ऐसा कहा जा रहा है क़ि अदालत ने जांच अधिकारी के विरुद्ध विभागीय जांच के आदेश भी दिए, जो यह संकेत देता है कि न्यायालय ने जांच की गुणवत्ता पर गंभीर प्रश्न उठाए।अभियोजन एजेंसी केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने 23 व्यक्तियों के विरुद्ध आरोपपत्र दाखिल किया था, परंतु विशेष न्यायाधीश ने सभी के विरुद्ध आरोप तय करने से इनकार कर दिया। अब एजेंसी द्वारा दिल्ली उच्च न्यायालय और संभावित रूप से सुप्रीम कोर्ट में अपील किए जाने की संभावना है, जिससे यह मामला आगे भी बहुत वर्षों तक प्रक्रिया के तहत चल सकता है।

साथियों बात अगर हम राउज एवेन्यू कोर्ट की चार महत्वपूर्ण टिप्पणियों को समझने की करें तो एक मीडिया चैनल के अनुसार कोर्ट ने अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया सहित सभी 23 आरोपियों को बरी किया। कहा कि हजारों पन्नों की चार्जशीट में कई खामियां हैं और उसमें लगाए गए आरोप किसी गवाह या बयान से साबित नहीं होते। चार्जशीट में विरोधाभास हैं, जो कथित साजिश (आरोपों) की पूरी थ्योरी को कमजोर करते हैं।अदालत ने सीबीआई के जांच अधिकारी (आईओ) के खिलाफ विभागीय जांच के आदेश भी दिए हैं (1) आबकारी नीति पर क्या कहा- आबकारी नीति के निर्माण में कोई व्यापक साजिश या आपराधिक मंशा नहीं थी। अभियोजन पक्ष (सीबीआई) का मामला न्यायिक जांच पर खरा नहीं उतरता। सीबीआई ने साजिश की एक कहानी गढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसका सिद्धांत ठोस साक्ष्यों के बजाय मात्र अनुमान पर आधारित था।(2) केजरीवाल पर क्या कहा- केजरीवाल का नाम बिना किसी ठोस सबूत के जोड़ा गया। जब मामला किसी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति से जुड़ा हो, तब बिना पुख्ता सबूतों के आरोप लगाना कानून के सिद्धांतों के खिलाफ है (3) मुख्य आरोपी कुलदीप पर क्या कहा- मुख्य आरोपी कुलदीप सिंह को बरी करते हुए कहा कि हैरानी की बात है कि उन्हें पहला आरोपी क्यों बनाया गया, जबकि उनके खिलाफ कोई ठोस सामग्री नहीं थी। (4) मनीष सिसोदिया पर क्या कहा- सिसोदिया पर आरोप था कि वे शराब नीति बनाने और लागू करने के जिम्मेदार थे, लेकिन अदालत ने कहा कि उनके शामिल होने का कोई सबूत नहीं मिला और न ही उनके खिलाफ कोई बरामदगी हुई।

साथियों बात अगर हम न्यायिक प्रक्रिया बनाम राजनीतिक परिणाम इसको समझने की करें तो इस प्रकरण ने एक और महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा किया ?क्या न्यायिक आरोप और राजनीतिक परिणामों के बीच कोई संतुलन होना चाहिए?आरोपों के दौरान व्यापक मीडिया कवरेज, 24 घंटे की बहसें,और चुनावी वातावरण में आरोपों की पुनरावृत्ति ने सार्वजनिक धारणा को प्रभावित किया। यदि बाद में अदालत आरोपों को खारिज कर दे, तो क्या पूर्व में हुई राजनीतिक और सामाजिक क्षति की भरपाई संभव है? लोकतंत्र में आरोप लगाना और उनकी जांच होना सामान्य प्रक्रिया है, परंतु यदि जांच की गुणवत्ता कमजोर हो और आरोप सिद्ध न हों, तो राजनीतिक जीवन पर उसका प्रभाव असमानुपाती हो सकता है। यह स्थिति केवल भारत तक सीमित नहीं; विश्व के अनेक लोकतंत्रों में भी अभियोजन और राजनीतिक शक्ति के संतुलन पर हमेशा बहस होती रही है।निर्दोष व्यक्ति की क्षतिः सामाजिक आर्थिक और नैतिक आयामयदि कोई व्यक्ति लंबी अवधि तक जेल में रहता है और अंततः बरी हो जाता है, तो उसकी क्षतिबहु-आयामी होती है। (1) सामाजिक क्षतिः समाज में बदनामी, रिश्तों में दरार, और सार्वजनिक छवि का ह्रास।(2) आर्थिक क्षतिः आय का नुकसान कानूनी खर्च, संपत्ति का अवमूल्यन। (3) मानसिक आघातः अवसाद, तनाव, और दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव। (4) राजनीतिक प्रभावः यदि आरोपी सार्वजनिक पद पर हो, तो चुनावी हार या पद से हटना।इन सबकी भरपाई केवल रुबरीरु शब्द से नहीं हो सकती।भारत में ऐसा कोई समग्र केंद्रीय कानून नहीं है, यद्यपि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के उल्लंघन पर न्यायालय क्षतिपूर्ति दे सकते हैं।

साथियों बात अगर हम क्या अभियोजन पर दंडात्मक लागत लगनी चाहिए? इसको समझने की करें तो एक महत्वपूर्ण नीति प्रश्न यह है कि यदि अभियोजन बार-बार अपील करता है और हर स्तरपर असफल होता है, तो क्या उस पर दंडात्मक लागत लगाई जानी चाहिए? इससे दो संभावित लाभ हो सकते हैं:(1) अनावश्यक या कमजोर मामलों में अपील की प्रवृत्ति घटेगी।(2) जांच एजेंसियाँ अधिक जिम्मेदारी और गुणवत्ता के साथ आरोपपत्र दाखिल करेंगी।हालाँकि, यह भी ध्यान रखना होगा कि अपील का अधिकार न्यायिक प्रणाली का अभिन्न अंग है।अतः संतुलन आवश्यक है, दुरुपयोग पर रोक, परंतु न्याय पाने के अवसर का संरक्षण होना चाहिए।

साथियों बात अगर हम जांच एजेंसियों की जवाबदेही को समझने की करें तो, जब अदालत यह कहे कि साजिश की थ्योरी अनुमान पर आधारित थी, तो यह जांच की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न है। यदि जांच अधिकारी के विरुद्ध विभागीय जांच का आदेश दिया गया है, तो यह संकेत है कि न्यायालय जवाबदेही सुनिश्चित करना चाहता है।नीति निर्धारकों को विचार करना चाहिए: (1) क्या जांच अधिकारियों के लिएस्वतंत्र निगरानी तंत्र हो?(2) क्या अभियोजन स्वीकृति से पूर्व स्वतंत्र विधिक समीक्षा अनिवार्य हो? (3) क्या राजनीतिक संवेदनशील मामलों में विशेष न्यायिक पर्यवेक्षण हो?

पारिवारिक देखभाल करने वालों की देखभाल: करुणा के मौन स्तंभों का समर्थन करना

विजय गर्ग

पारिवारिक देखभालकर्ता वे व्यक्ति होते हैं जो अपने प्रियजन को नियमित देखभाल और सहायता प्रदान करते हैं, जो बीमारी, विकलांगता या उम्र बढ़ने के कारण स्वयं की पूरी तरह से देखभाल नहीं कर सकते। उनकी जिम्मेदारियों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं।

पारिवारिक देखभालकर्ता स्वास्थ्य सेवा और भावनात्मक सहायता प्रणालियों की अदृश्य रीढ़ का निर्माण करते हैं। वे बेटे, बेटियां, पति-पत्नी, भाई-बहन और यहां तक कि बच्चे भी हैं जो वृद्ध माता-पिता, दीर्घकालिक रूप से बीमार रिश्तेदारों या विकलांग परिवार के सदस्यों की देखभाल करने के लिए आगे आते हैं। उनकी सेवा अक्सर अवैतनिक, अज्ञात और भावनात्मक रूप से मांग वाली होती है। भारत जैसे देशों में, जहां पारिवारिक बंधन सामाजिक जीवन का केन्द्र बना हुआ है, देखभाल को एक संरचित जिम्मेदारी के बजाय एक नैतिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता है। फिर भी इस महान भूमिका के पीछे शारीरिक थकावट, भावनात्मक तनाव, वित्तीय दबाव और सामाजिक अलगाव छिपा है।

पारिवारिक देखभालकर्ता कौन हैं?

पारिवारिक देखभालकर्ता वे व्यक्ति होते हैं जो अपने प्रियजन को नियमित देखभाल और सहायता प्रदान करते हैं, जो बीमारी, विकलांगता या उम्र बढ़ने के कारण स्वयं की पूरी तरह से देखभाल नहीं कर सकते। उनकी जिम्मेदारियों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं

दवाओं और चिकित्सा नियुक्तियों का प्रबंधन

स्नान, भोजन और गतिशीलता में सहायता करना

भावनात्मक संगति प्रदान करना

वित्त और घरेलू कार्यों को संभालना

स्वास्थ्य सेवा सेवाओं का समन्वय करना

यद्यपि देखभाल करना बहुत ही संतुष्टिदायक हो सकता है, लेकिन इसकी निरंतर मांगों के कारण देखभालकर्ता को थकान और थकावट का सामना करना पड़ सकता है।

देखभाल करने वालों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

शारीरिक तनाव मरीजों को उठाना, रात में नींद न आना और लगातार सतर्क रहना देखभाल करने वालों के स्वास्थ्य को कमजोर कर सकता है।

भावनात्मक तनाव किसी प्रियजन को कष्ट सहते देखना चिंता, अवसाद और भावनात्मक थकावट का कारण बन सकता है।

वित्तीय बोझ चिकित्सा लागत, काम के घंटों में कमी, या देखभाल के लिए नौकरी छोड़ने से वित्तीय अस्थिरता पैदा हो सकती है।

सामाजिक अलगाव देखभालकर्ता अक्सर व्यक्तिगत समय, मित्रता और अवकाश गतिविधियों का त्याग करते हैं।

प्रशिक्षण का अभाव अधिकांश पारिवारिक देखभालकर्ताओं को चिकित्सा देखभाल में बहुत कम मार्गदर्शन मिलता है, जिससे अनिश्चितता और तनाव पैदा होता है।

देखभालकर्ताओं को सहायता प्रदान करने का महत्व

जब देखभालकर्ता परेशान हो जाते हैं, तो देखभाल की गुणवत्ता कम हो जाती है। देखभालकर्ताओं को सहायता प्रदान करने से रोगियों के लिए बेहतर स्वास्थ्य परिणाम सुनिश्चित होते हैं तथा देखभाल प्रदाताओं की भलाई सुरक्षित रहती है। देखभाल करने वालों को स्वास्थ्य सेवा में आवश्यक भागीदार के रूप में मान्यता देना महत्वपूर्ण है।

देखभाल करने वालों की देखभाल के व्यावहारिक तरीके

आत्म-देखभाल को प्रोत्साहित करें

देखभाल करने वालों को उचित नींद, पोषण और नियमित चिकित्सा जांच के माध्यम से अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए।

जिम्मेदारियों को साझा करें परिवार के सदस्यों को बर्नआउट से बचने के लिए देखभाल संबंधी कार्यों को विभाजित करना चाहिए।

पेशेवर सहायता प्राप्त करें घरेलू नर्सें, फिजियोथेरेपिस्ट और परामर्श सेवाएं इस बोझ को कम कर सकती हैं।

सहायता समूहों में शामिल हों समान चुनौतियों का सामना कर रहे अन्य लोगों से बात करने से भावनात्मक राहत और व्यावहारिक सलाह मिलती है।

देखभाल कौशल सीखें प्राथमिक उपचार, गतिशीलता सहायता और दवा प्रबंधन में बुनियादी प्रशिक्षण आत्मविश्वास बढ़ा सकता है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग करें दवा अनुस्मारक, टेलीमेडिसिन और स्वास्थ्य निगरानी ऐप देखभाल कार्यों को सरल बनाते हैं।

समाज और नीति की भूमिका

सरकारें और समुदाय देखभालकर्ता के समर्थन को मजबूत कर सकते हैं

देखभालकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करना

राहत देखभाल सेवाएं प्रदान करना

वित्तीय सहायता या कर लाभ का विस्तार करना

सामुदायिक स्वास्थ्य आउटरीच कार्यक्रमों का विस्तार

देखभालकर्ता के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाना

कार्यस्थल लचीले घंटे और देखभालकर्ता अवकाश नीतियां प्रदान करके भी योगदान दे सकते हैं।

भावनात्मक कल्याण को संरक्षित करना

देखभाल करने वालों को याद रखना चाहिए:

मदद मांगना ठीक है।

ब्रेक लेना उपेक्षा नहीं है, यह आवश्यक है।

भावनात्मक अभिव्यक्ति तनाव को कम करती है।

करुणा में स्वयं को भी शामिल करना चाहिए।

निष्कर्ष

परिवार की देखभाल करने वाले लोग शांत नायक होते हैं जो परिवारों को उनके सबसे कमजोर क्षणों में एक साथ रखते हैं। उनका समर्पण प्रेम, जिम्मेदारी और लचीलापन को दर्शाता है। फिर भी वे खाली प्याले से पानी नहीं डाल सकते। सहानुभूति, साझा जिम्मेदारी और संस्थागत समर्थन के माध्यम से देखभाल करने वालों को सहायता प्रदान करके समाज यह सुनिश्चित करता है कि करुणा स्थायी बनी रहे।

देखभालकर्ताओं की देखभाल करना दान का कार्य नहीं है - यह स्वस्थ परिवारों, मजबूत समुदायों और अधिक मानवीय दुनिया में निवेश है।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

बहुत शांत

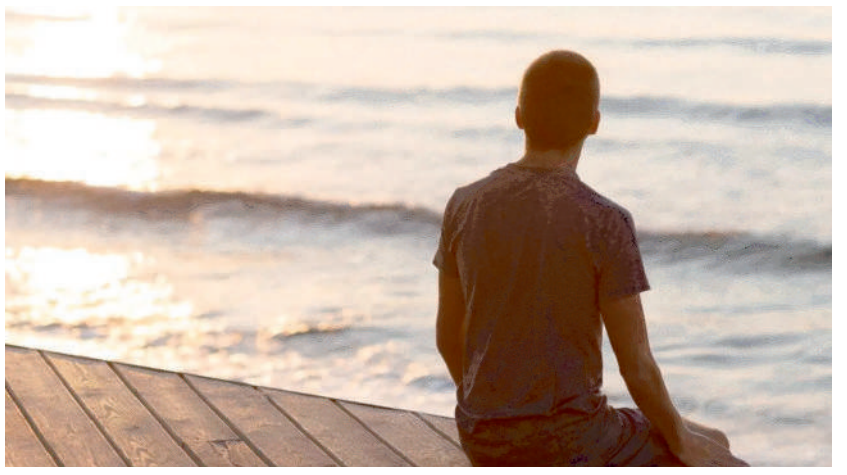

कक्षाएं शांत होती जा रही हैं। विचार के साथ आने वाली चिंतनशील शांति में नहीं, बल्कि एक गहरी, स्थायी स्थिरता में जो भारतीय विश्वविद्यालयों में परिचित हो गई है। शैक्षणिक जीवन के एक करीबी पर्यवेक्षक के रूप में, मैंने देखा है कि यह शांति हमारे विश्वविद्यालयों में लगातार फैल रही है, तथा सीखने की प्रक्रिया को बदल रही है। उपस्थिति पैटर्न परिवर्तन का केवल एक हिस्सा ही प्रकट करता है। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि अब छात्रों का शिक्षाविदों के साथ रिश्ता बदल गया है। कक्षा, जो कभी बौद्धिक जीवन का निर्विवाद केंद्र हुआ करती थी, धीरे-धीरे अपना आकर्षण खो रही है। छात्र कम बार आते हैं, कम समय तक रुकते हैं, तथा दूर से सीखने में तेजी से संलग्न होते हैं।

डॉ. विजय गर्ग

डिजिटल संसाधनों ने छात्रवृत्ति को निर्विवाद रूप से समृद्ध बनाया है और जांच के नए रास्ते खोले हैं। लेकिन वे मानवीय मुलाकात की जगह नहीं ले सकते जो शिक्षण और सीखने के मूल में है कक्षा सहभागिता में गिरावट भारत कक्षाएं शांत होती जा रही हैं। विचार के साथ आने वाली चिंतनशील शांति में नहीं, बल्कि एक गहरी, स्थायी स्थिरता में जो भारतीय विश्वविद्यालयों में परिचित हो गई है। शैक्षणिक जीवन के एक करीबी पर्यवेक्षक के रूप में, मैंने देखा है कि यह शांति हमारे विश्वविद्यालयों में लगातार फैल रही है, तथा सीखने की प्रक्रिया को बदल रही है। उपस्थिति पैटर्न परिवर्तन का केवल एक हिस्सा ही प्रकट करता है। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि अब छात्रों का शिक्षाविदों के साथ रिश्ता बदल गया है। कक्षा, जो कभी बौद्धिक जीवन का निर्विवाद केंद्र हुआ करती थी, धीरे-धीरे अपना आकर्षण खो रही है। छात्र कम बार आते हैं, कम समय तक रुकते हैं, तथा दूर से सीखने में तेजी से संलग्न होते हैं।

विश्वविद्यालय को एक साझा स्थान के रूप में प्रस्तुत करने का विचार, जिसमें उपस्थिति और भागीदारी की आवश्यकता होती है, कमजोर होता जा रहा है। सबसे अधिक दिखाई देने वाले बदलावों में से एक है पढ़ने की आदत। पुस्तकें, जो कभी विचारों के धीमी गति से निर्माण में सहायक होती थीं, अब स्क्रीन और पोर्टल की ओर झुक गई हैं। अब ज्ञान का सामना ऑनलाइन संसाधनों, सारांशों और खोज योग्य पाठों के माध्यम से किया जाता है। हालांकि इससे पहुंच बढ़ गई है, लेकिन ध्यान भी कम हो गया है। पढ़ना इमर्सिव के बजाय कुशल हो गया है, तथा निरंतर पढ़ने के बजाय चयनात्मक हो गया है। किसी कठिन तर्क के साथ बैठने, पुनः पढ़ने, चिंतन करने तथा किसी पाठ से चुपचाप असहमत होने के लिए आवश्यक धैर्य कम होता जा रहा है।

सबसे अधिक परेशान करने वाली क्षति द्वंद्वात्मक सहभागिता में गिरावट है। कक्षा का उद्देश्य कभी भी मौन रहना नहीं था। इसमें ऐसे प्रश्न शामिल थे जो व्याख्यान में बाधा डालते थे, बहसें जो निष्कर्षों को अनिर्णीत कर देती थीं, तथा बातचीत जो पाठ्यक्रम से परे होती थी। आज, कई छात्र बोलने में संकोच करते हैं, चुनौती देते हैं, या गलत होने का जोखिम उठाते हैं। इस प्रकार मौन असहमति का स्थान ले लेता है। शिक्षण में एकतरफा प्रदर्शन और सीखने का निष्क्रिय स्वागत कार्य होने का जोखिम है।

महामारी के बाद की स्थिति में विश्वविद्यालय में कई स्थानों पर कक्षाएं अप्रत्याशित रूप से खाली हो गई हैं। उपस्थिति को अब शिक्षा का अभिन्न अंग नहीं माना जाता, बल्कि इसे वैकल्पिक माना जाता है। इससे शैक्षणिक जीवन की लय बदल गई है। जब छात्र शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं होते हैं, तो चर्चा को बनाए रखने वाली साझा ऊर्जा कमजोर हो जाती है। विचार उस तात्कालिकता को खो देते हैं जो वास्तविक समय में, उन साथियों की संगति में परीक्षण किए जाने से आती है जो प्रश्न पूछते हैं, प्रतिस्पर्धा करते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं।

यहां जो दांव पर लगा है वह अनुशासन या अनुपालन नहीं, बल्कि मूल्य है। विश्वविद्यालय लंबे समय से एक ऐसा स्थान रहा है जहां प्रश्नों का उतना ही महत्व था जितना कि उत्तरों का। इसने छात्रों को जोर से सोचने, ध्यानपूर्वक सुनने और असहमति के माध्यम से अपनी स्थिति को परिष्कृत करने का प्रशिक्षण दिया। ऐसी आदतें बार-बार मिलने, साझा ध्यान देने और उपस्थित होने के अनुशासन के माध्यम से विकसित होती हैं।

शांत कक्षाएं इस बात को लेकर बड़ी चिंता पैदा करती हैं कि अब शिक्षा का अनुभव किस प्रकार किया जा रहा है। सीखना तेजी से एक निजी गतिविधि की तरह होता जा रहा है, जो व्यक्तिगत रूप से और अक्सर दूर से पूरा किया जाता है। फिर भी बौद्धिक विकास हमेशा सामूहिक आदान-प्रदान पर निर्भर रहा है। विचार तब गहरा होता है जब उसे दूसरों की उपस्थिति में बोला जाता है, विवादित किया जाता है और संशोधित किया जाता है। एकांतवास दक्षता को बढ़ा सकता है, लेकिन यह शायद ही कभी बुद्धि का पोषण करता है।

यह प्रतिबिंब प्रौद्योगिकी या परिवर्तन के विरुद्ध कोई तर्क नहीं है। डिजिटल संसाधनों ने छात्रवृत्ति को निर्विवाद रूप से समृद्ध बनाया है और जांच के नए रास्ते खोले हैं। लेकिन वे मानवीय मुलाकात की जगह नहीं ले सकते जो शिक्षण और सीखने के मूल में है। कक्षा उन कुछ स्थानों में से एक है जहां ध्यान साझा किया जाता है, जहां विचार धीरे-धीरे सामने आते हैं, और जहां सोच एक दृश्यमान, सांप्रदायिक कार्य बन जाती है जिसे सुनने के साथ-साथ बोलने से भी आकार मिलता है।

घंटी अभी भी बजती है और कमरे अभी भी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे पुनः प्रश्नों, वार्तालापों और एक साथ सोचने की शांत तीव्रता से भर जाएंगे या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उपस्थिति का पुनर्मूल्यांकन कैसे करते हैं। अब जो सन्नाटा छा गया है वह केवल परिस्थितियों का परिणाम नहीं है। यह एक ऐसा विराम है जो चिंतन को आमंत्रित करता है और शायद कक्षा के जीवन के प्रति नई प्रतिबद्धता को भी प्रेरित करता है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद

तकनीक के दुरुपयोग का फैलता दायरा

डॉ. विजय गर्ग

मानव सभ्यता ने तकनीक की सहायता से अभूतपूर्व प्रगति की है। संचार, शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन और प्रशासन—हर क्षेत्र में तकनीकी विकास ने जीवन को आसान बनाया है। परन्तु जिस तकनीक ने दुनिया को जोड़ा है, उसी के दुरुपयोग ने अनेक नई चुनौतियों को जन्म दिया है। आज तकनीक का गलत उपयोग समाज, नैतिकता और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल रहा है।

तकनीक: सुविधा से निर्भरता तक

स्मार्टफोन और इंटरनेट ने जानकारी को हमारी उंगलियों पर ला दिया है। लेकिन सुविधा धीरे-धीरे निर्भरता में बदल रही है। लोग आमने-सामने बातचीत के बजाय स्क्रीन पर अधिक समय बिताने लगे हैं। परिवार और समाज के बीच संवाद कम होता जा रहा है।

सोशल मीडिया और गलत सूचना

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे Facebook, Instagram और WhatsApp ने संवाद को आसान बनाया है, लेकिन इनके माध्यम से अफवाहें, फर्जी समाचार और भ्रामक सूचनाएँ तेज़ी से फैलती हैं। गलत सूचना सामाजिक तनाव, घबराहट और अविश्वास को जन्म दे सकती है।

बच्चों और युवाओं पर प्रभाव

तकनीक का अनियंत्रित उपयोग बच्चों और युवाओं के विकास को प्रभावित कर रहा है:

पढ़ाई में ध्यान की कमी

डिजिटल लत की समस्या

नींद की कमी

आक्रामक व्यवहार

सामाजिक अलगाव

ऑनलाइन गेमिंग और त्वरित मनोरंजन की आदत धैर्य और एकाग्रता को कमजोर कर रही है।

साइबर अपराध और डिजिटल धोखाधड़ी

तकनीक के दुरुपयोग का सबसे खतरनाक पहलू साइबर अपराध है। पहचान की चोरी, ऑनलाइन ठगी, बैंकिंग धोखाधड़ी, फर्जी कॉल और डेटा चोरी जैसी घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। अनजान लिंक पर क्लिक करना या निजी जानकारी साझा करना गंभीर नुकसान का कारण बन सकता है।

निजता पर खतरा

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हमारी व्यक्तिगत जानकारी सुरक्षित नहीं रहती यदि सावधानी न बरती जाए। ऐप्स और वेबसाइटें उपयोगकर्ताओं का डेटा एकत्र करती हैं, जिसका दुरुपयोग किया जा सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

लगातार स्क्रीन उपयोग, तुलना की संस्कृति और ऑनलाइन मान्यता की चाह तनाव, चिंता और आत्मसम्मान में कमी का कारण बन रही है। आभासी दुनिया में स्वीकृति की तलाश वास्तविक जीवन के संतुलन को बिगाड़ सकती है।

समाधान: जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता

तकनीक समस्या नहीं है; उसका दुरुपयोग समस्या है। समाधान के लिए समाज, परिवार और संस्थाओं को मिलकर प्रयास करने होंगे:

डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना

बच्चों के स्क्रीन समय पर नियंत्रण

सोशल मीडिया पर जानकारी साझा करने से पहले सत्यापन

साइबर सुरक्षा जागरूकता

तकनीक से दूरी बनाकर वास्तविक गतिविधियों में भागीदारी

निष्कर्ष

तकनीक मानव प्रगति का शक्तिशाली साधन है, परन्तु इसका अनियंत्रित और अनुचित उपयोग सामाजिक संतुलन को बिगाड़ सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक के स्वामी बनें, उसके गुलाम नहीं। विवेकपूर्ण और जिम्मेदार उपयोग ही तकनीक को मानव कल्याण का साधन बना सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

बोतलबंद पानी का भारत : : सार्वजनिक जल प्रशासन की गहरी विफलता

- डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत में बोतलबंद पानी पर बढ़ती निर्भरता केवल उपभोक्ता व्यवहार में आए बदलाव की कहानी नहीं है, बल्कि यह सार्वजनिक जल प्रशासन में व्याप्त गहरी और बहुस्तरीय प्रणालीगत समस्याओं की ओर भी स्पष्ट संकेत करती है। कभी जो नल का पानी नागरिकों के लिए बुनियादी अधिकार और राज्य की जिम्मेदारी माना जाता था, वही आज अविश्वास, असुरक्षा और असमानता का प्रतीक बनता जा रहा है। शहरों से लेकर कस्बों और यहां तक कि ग्रामीण इलाकों में भी लोग पीने के लिए प्लास्टिक की बोतलों पर निर्भर होते जा रहे हैं। यह प्रवृत्ति न केवल आर्थिक बोझ बढ़ाती है, बल्कि पर्यावरण, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक शासन की अवधारणा पर भी गंभीर प्रश्न खड़े करती है।

आधुनिक भारत में जल संकट को अक्सर वर्षा की कमी, जलवायु परिवर्तन या बढ़ती जनसंख्या से जोड़कर देखा जाता है। हालांकि ये सभी कारक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन बोतलबंद पानी की लोकप्रियता का मूल कारण इनसे कहीं अधिक गहरा है। असल समस्या यह है कि नागरिकों का भरोसा सार्वजनिक जल आपूर्ति प्रणालियों से लगातार टूटता जा रहा है। नलों से आने वाले पानी की गुणवत्ता पर संदेह, नियमित आपूर्ति का अभाव, और पारदर्शिता की कमी ने लोगों को वैकल्पिक स्रोतों की ओर धकेल दिया है। जब राज्य अपनी बुनियादी जिम्मेदारी निभाने में असफल होता है, तब बाजार उस खाली स्थान को भर देता है—अक्सर मुनाफे की शर्तों पर।

शहरी भारत में बोतलबंद पानी का उपयोग तेजी से बढ़ा है। महानगरों में तो यह लगभग जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। कार्यालयों, स्कूलों, अस्पतालों और यहां तक कि सरकारी दफ्तरों में भी बड़े जार और बोतलें आम दृश्य हैं। यह स्थिति विडंबनापूर्ण है, क्योंकि इन्हीं शहरों में सबसे विकसित जल अवसंरचना होने का दावा किया जाता है। यदि इतनी सुविधाओं के बावजूद नागरिक सुरक्षित नल का पानी नहीं पी सकते, तो यह प्रशासनिक विफलता का सीधा प्रमाण है। पाइपलाइन की जर्जर हालत, सीवेज और पेयजल लाइनों का आपस में मिलना, तथा नियमित परीक्षण की कमी—ये सभी समस्याएँ वर्षों से ज्ञात हैं, लेकिन समाधान आधे-अधूरे ही रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अलग होते हुए भी उतनी ही चिंताजनक है। वहां बोतलबंद पानी का उपयोग अपेक्षाकृत कम है, लेकिन जैसे-जैसे ग्रामीण बाजारों तक निजी कंपनियों की पहुंच बढ़ रही है, यह निर्भरता वहां भी बढ़ने लगी है। कई इलाकों में भूजल में फ्लोराइड, आर्सेनिक या आयरन की अधिकता के कारण लोग स्थानीय जल स्रोतों से डरने लगे हैं। राज्य द्वारा उपलब्ध कराए गए सामुदायिक नल या हैंडपंप अक्सर या तो खराब रहते हैं या फिर उनका पानी पीने योग्य नहीं होता। ऐसे में जिनके पास आर्थिक क्षमता है, वे बोतलबंद पानी खरीद लेते हैं, जबकि गरीब तबके दूषित पानी पीने को मजबूर रहते हैं। यह स्थिति जल के क्षेत्र में गहरी असमानता को जन्म देती है।

बोतलबंद पानी उद्योग का विस्तार अपने आप में कई सवाल खड़े करता है। एक ओर यह उद्योग "शुद्धता" और "सुरक्षा" का वादा करता है, वहीं दूसरी ओर इसके नियमन में गंभीर खामियां हैं। कई बार यह पाया गया है कि बाजार में उपलब्ध बोतलबंद पानी भी गुणवत्ता मानकों पर खरा नहीं उतरता। इसके बावजूद उपभोक्ता इसे नल के पानी से अधिक सुरक्षित मानते हैं। यह धारणा स्वयं में सार्वजनिक जल संस्थानों की साख पर सवाल है। यदि राज्य द्वारा प्रमाणित और नियंत्रित जल आपूर्ति प्रणाली पर नागरिक भरोसा नहीं करते, तो यह लोकतांत्रिक शासन की विश्वसनीयता के लिए भी खतरे की घंटी है।

पर्यावरणीय दृष्टि से बोतलबंद पानी पर निर्भरता अत्यंत विनाशकारी है। प्लास्टिक की बोतलें कचरे के पहाड़ में बदल रही हैं। पुनर्चक्रण की दर बेहद कम है और अधिकांश प्लास्टिक अंततः नदियों, झीलों और समुद्रों में पहुंच जाता है। इसके अलावा, बोतलबंद पानी के उत्पादन में भी भारी मात्रा में जल और ऊर्जा की खपत होती है। यानी जिस संसाधन की कमी की बात की जा रही है, उसी का अत्यधिक दोहन करके एक कृत्रिम समाधान प्रस्तुत किया जा रहा है। यह विरोधाभास नीति निर्माताओं की अल्पकालिक सोच को उजागर करता है।

सार्वजनिक जल प्रशासन की समस्याएँ केवल तकनीकी नहीं हैं; वे संस्थागत और राजनीतिक भी हैं। जल प्रबंधन से जुड़े विभाग अक्सर संसाधनों की कमी, कुशल मानवबल के अभाव और आपसी समन्वय की समस्या से जूझते हैं। इसके अलावा, जल आपूर्ति जैसी बुनियादी सेवा को राजनीतिक प्राथमिकता भी अक्सर नहीं मिलती। चुनावी घोषणाओं में बड़े बांध, नदियों को जोड़ने की परियोजनाएं या स्मार्ट शहरों की बातें तो होती हैं, लेकिन रोजमर्रा की जल आपूर्ति को सुधारने पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। परिणामस्वरूप, छोटी-छोटी लेकिन महत्वपूर्ण समस्याएं वर्षों तक अनसुलझी रहती हैं।

निजीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति भी इस संकट को गहरा कर रही है। जब सार्वजनिक प्रणालियाँ कमजोर होती हैं, तो समाधान के रूप में निजी कंपनियों को आगे लाया जाता है। हालांकि कुछ मामलों में इससे दक्षता बढ़ी है, लेकिन अक्सर इसका लाभ केवल उन लोगों को मिलता है जो भुगतान कर सकते हैं। पानी जैसे आवश्यक संसाधन का बाजार आधारित वितरण सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के विपरीत है। बोतलबंद पानी इस निजीकरण का सबसे स्पष्ट उदाहरण है, जहां स्वच्छ पानी एक मौलिक अधिकार नहीं, बल्कि एक उपभोक्ता वस्तु बन जाता है।

इस पूरी स्थिति का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि बोतलबंद पानी पर निर्भरता धीरे-धीरे सामान्य होती जा रही है। लोग इसे समस्या के लक्षण के बजाय समाधान के रूप में देखने लगे हैं। इससे सार्वजनिक दबाव कम होता है और प्रशासनिक सुधार की मांग कमजोर पड़ जाती है। जब नागरिक स्वयं वैकल्पिक व्यवस्था कर लेते हैं, तो राज्य पर जवाबदेही का दबाव घट जाता है। यह चुपचाप स्वीकार की गई असफलता भविष्य में और बड़े संकटों को जन्म दे सकती है।

आवश्यकता इस बात की है कि जल को फिर से सार्वजनिक भलाई के रूप में स्थापित किया जाए। इसके लिए सबसे पहले नल के पानी की गुणवत्ता और नियमितता सुनिश्चित करनी होगी। पारदर्शी जल परीक्षण, परिणामों की सार्वजनिक उपलब्धता और शिकायत निवारण की प्रभावी व्यवस्था नागरिकों का भरोसा बहाल कर सकती है। साथ ही, जल अवसंरचना में निवेश को प्राथमिकता देनी होगी—चाहे वह पाइपलाइन की मरम्मत हो, सीवेज प्रबंधन हो या जल शोधन संयंत्रों का आधुनिकीकरण।

इसके साथ-साथ जन जागरूकता भी महत्वपूर्ण है। लोगों को यह समझना होगा कि बोतलबंद पानी दीर्घकालिक समाधान नहीं है। पर्यावरणीय और सामाजिक लागतों के बारे में जानकारी बढ़ाकर उपभोक्ता व्यवहार को बदला जा सकता है। स्कूलों, सामुदायिक संगठनों और स्थानीय निकायों की भूमिका इसमें अहम हो सकती है।

इधर-उधर से : इधर - भूपेंद्र सारस्वत सारथी

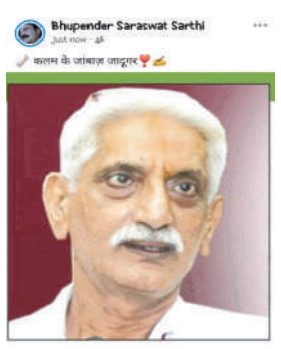

भुवनेश्वर जिला कांग्रेस ने विरोध प्रदर्शन किया और केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी के इस्तीफे की मांग की

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वरः लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हमेशा देश का नाम रोशन करने की कोशिश की है, वहीं असहिष्णु सत्ताधारी पार्टी BJP बार-बार उनके खिलाफ अपशब्दों का इस्तेमाल करती रही है। भारतीय संसदीय शासन के सभी नियमों का साफ उल्लंघन करते हुए, संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू द्वारा कांग्रेस नेता श्री गांधी के खिलाफ कहे गए अपशब्दों को 'देश की सुरक्षा के लिए खतरा' कहना बहुत निंदनीय है। विवादित एपस्टीन फाइलों में केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी का नाम होने और श्री गांधी को चुनाव से बाहर रखने की बात करने वाले MP निशिकांत दुबे की गिरफ्तारी के बाद, ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी और ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर भुवनेश्वर जिला कांग्रेस कमेटी ने स्थानीय DCP ऑफिस के सामने विरोध प्रदर्शन किया। इस मौके पर भुवनेश्वर जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री प्रकाश चंद्र जेना के नेतृत्व में DCP के पास FIR दर्ज कर उक्त तीनों नेताओं को बर्खास्त करने और गिरफ्तार करने की मांग की गई है। श्री जेना ने कहा कि जब तक कांग्रेस पार्टी की मांगें पूरी नहीं हो जातीं, तब तक यह आंदोलन कार्यक्रम जारी रहेगा। कांग्रेस नेता सर्वश्री सुरेश कुमार राउतराय, शिवानंद रे, प्रशांत चंपत्ति, अशोक दास, सुब्रत महापात्र, कैलाश साहू, मिहिर आचार्य, हिमाशुंग लेंका, मोहन जेना, जयकृष्ण मल्लिया, रजनी मोहंती, जयकृष्ण सुबुद्धि, पार्वती प्रताप सिंह, गीतांजलि मोहंती, श्रेयस्मिता पंडा, जयश्री पात्रा, सूर्यकांत जेना, सुनीता बिस्वाल, हलधर सेठी, जयस्मिता मोहंती, प्राची राउतराय, लिंगराज साहू, मिनरंजनद जेना, आलोक मोहंती, जानकी मल्लिक, अथाराम पति, राजकिशोर बारिक, मित्रभानु महापात्र, तपस सेठी, देवराज मिश्रा, तरुण मिश्रा, लोकनाथ दास, देव प्रसाद, विनोद पाणि, एमडी सहदुल्ला, देवी त्रिपाठी, रंजन बेहरा सहित सैकड़ों प्रमुख कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

राष्ट्रीय चुनौती बनती बस हड़तालें— कब होगा स्थायी समाधान?

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

त्योहार की आहट के बीच मध्य प्रदेश 2 मार्च 2026 की सुबह एक बड़े ठहराव की ओर बढ़ रहा है—सड़कों पर सन्नाटा होगा और यात्रियों की उम्मीदें अधर में लटकेंगी। मध्य प्रदेश बस ओनर्स एसोसिएशन ने नई परिवहन नीति के खिलाफ 2 मार्च 2026 को सुबह 6 बजे से प्रदेश के 55 जिलों में अनिश्चितकालीन हड़ताल का ऐलान कर दिया है—यदि सरकार ने उनकी मांगें नहीं मानीं तो करीब 20 हजार बसों के पहिए थम जाएंगे और लाखों यात्री सड़कों पर अटक जाएंगे। निजी ऑपरेटर्स का आरोप है कि पीपीपी मॉडल, सात जोनों में कंपनियों को अधिकार, बढ़ा हुआ टैक्स और बदले परमिट नियम उनके व्यवसाय की कमर तोड़ देंगे। होली से ठीक पहले उठाया गया यह कदम डेढ़ लाख से अधिक यात्रियों को सीधे प्रभावित करेगा। चेतावनी साफ है—क्या सरकार अब भी तत्परता दिखाकर ठोस, समयबद्ध निर्णय ले इस टकराव को टाल पाएगी, या फिर लाखों यात्रियों को सड़कों पर उतरने का इंतज़ार ही करना होगा?

हड़ताल की घोषणा कई दिन पहले हो जाती है, मांगें सार्वजनिक हो जाती हैं, वार्ता के दौर भी चलते हैं, फिर भी अंतिम निर्णय टलता रहता है। यह प्रतीक्षा आखिर किसके हित में है? सरकारें तब तक निर्णायक कदम क्यों नहीं उठातीं जब तक बसें सड़कों से गायब और जनता असहाय न हो जाए? यह कोई नई स्थिति नहीं, बल्कि बार-बार दोहराया जाने वाला पैटर्न है। जब चेतावनी स्पष्ट हो, पर्याप्त समय हो और संभावित नुकसान का अंदाजा भी हो, तब भी निष्क्रियता क्यों बनी रहती है? क्या प्रशासनिक तंत्र त्वरित निर्णय लेने में असमर्थ है या राजनीतिक समीकरण समाधान पर भारी पड़ते हैं? परिणाम हर बार एक जैसा होता है—तय तारीख आते ही परिवहन व्यवस्था चरमरा जाती है और आम आदमी को अपनी जेब और समय दोनों से इसकी कीमत चुकानी पड़ती है।

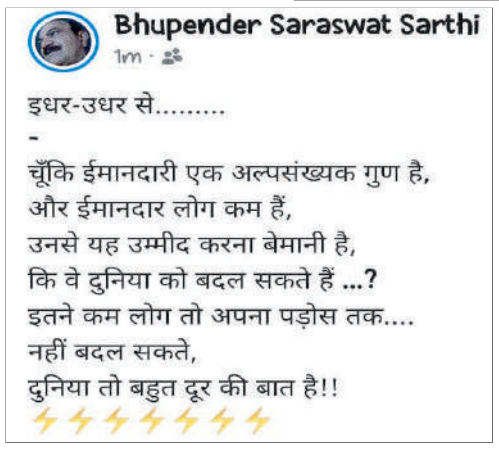

इस हड़ताल का सीधा और सबसे गहरा असर आमजन पर पड़ेगा। होली पर घर लौटने की तैयारी कर रहे छात्र, शहरों में काम कर रहे कामगार और परिवार से मिलने को उत्सुक लोग अचानक विकल्पहीन हो जाएंगे। बस किराए कई गुना तक बढ़ने की आशंका है, क्योंकि प्राइवेट टैक्सी और अन्य साधन महंगे तथा सीमित हैं। ट्रेनें पहले से भीड़ से जूझ रही हैं, ऐसे में अतिरिक्त दबाव हालात और बिगाड़ेगा। बुजुर्ग, बीमार और आपात स्थिति में यात्रा करने वाले लोग सबसे अधिक परेशान होंगे। छोटे व्यापारी, दिहाड़ी मजदूर और ग्रामीण क्षेत्रों के यात्री, जो बसों पर निर्भर हैं, आर्थिक झटका सहने को मजबूर होंगे। प्रतिदिन लाखों रुपये का अतिरिक्त बोझ जनता पर पड़ेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था की रफ्तार थम जाएगी।

यह संकट केवल मध्य प्रदेश तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चुनौती बन चुका है। परिवहन जैसे अनिवार्य क्षेत्र में बार-बार की हड़तालें विकासशील भारत की छवि पर सवाल खड़े करती हैं। विकसित देशों में सार्वजनिक परिवहन को आवश्यक सेवा मानकर सख्त कानून लागू हैं, जबकि यहां इसे लगभग सामान्य घटना की तरह लिया जाता है। इससे नीति-निर्माण की प्राथमिकताओं पर संदेह गहराता है। क्या संगठित दबाव समूह आम नागरिक की सुविधा पर भारी पड़ रहे हैं? जब हर राज्य में यही हाल उभर रहा हो, तो स्पष्ट है कि समाधान टुकड़ों में नहीं, व्यापक और संरचनात्मक होना चाहिए। राष्ट्रीय परिवहन नीति अब विकल्प नहीं, अपरिहार्य आवश्यकता है।

हालिया घटनाएं स्थिति की गंभीरता उजागर करती हैं। फरवरी 2026 में राजस्थान में निजी बस हड़ताल से लगभग 35,000 बसें बंद रहीं और 15 लाख से अधिक यात्री प्रभावित हुए; त्योहारों के बीच किराए कई गुना बढ़े और राज्य परिवहन पर भारी दबाव पड़ा। नवंबर 2025 में दक्षिण भारत के छह राज्यों में इंटरस्टेट लग्जरी बसों की हड़ताल से 1,500 से अधिक बसें ठप रहीं और रोज 45,000 यात्री फंसे। तीर्थयात्री और मरीज विशेष रूप से परेशान हुए। जनवरी 2018 में तमिलनाडु में छह दिन चली सरकारी बस कर्मचारियों की हड़ताल ने पूरे राज्य की रफ्तार थाम दी थी। ये उदाहरण साबित करते हैं—चेतावनियां मिलती हैं, संकट दिखता है, फिर भी समाधान आखिरी क्षण तक टलता रहता है।

सरकारों की प्रतीक्षा-नीति के पीछे राजनीतिक दबाव, चुनावी गणित, राजकोषीय बोझ और संगठित लॉबी की ताकत जैसे कारण गिनाए जाते हैं। बस मालिकों के संगठन प्रभावशाली हैं, उनकी मांगों को अनदेखा करना सरल नहीं। त्वरित निर्णय से खजाने पर भार बढ़ने की आशंका टालमटोल को जन्म देती है। पर इस रस्साकशी में सबसे कमजोर कड़ी आम यात्री बनता है—न वह नीति-निर्माण में शामिल, न वार्ता की मेज पर उसकी आवाज़। परिवहन बुनियादी सेवा है; इसे दबाव की रणनीति नहीं बनने देना चाहिए। चेतावनी मिलते ही उच्चस्तरीय समिति, समयबद्ध वार्ता और पारदर्शी संवाद शुरू हों, तो टकराव टल सकता है।

समाधान स्पष्ट हैं, कमी केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति की है। ऐसी संतुलित नीति जरूरी है जो ऑपरेटर्स की आर्थिक चिंता और यात्रियों की सुविधा—दोनों की रक्षा करे। मध्यस्थता तंत्र को संस्थागत बनाया जाए ताकि हड़ताल अंतिम उपाय रहे, पहला नहीं। परमिट, टैक्स और जोन व्यवस्था में बदलाव से पहले व्यापक परामर्श अनिवार्य हो। आवश्यक सेवा संबंधी प्रावधानों पर भी गंभीर विचार हो, जिससे आपात स्थितियों में न्यूनतम सेवाएं जारी रहें।

विज्ञान में महिलाओं की भागीदारी: विकास का सशक्त सूत्र

-सुनील कुमार महला

28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। वास्तव में, यह दिवस वैज्ञानिक सोच, नवाचार (इनोवेशन) और सतत विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) में विज्ञान की भूमिका को प्रोत्साहित करने का महत्वपूर्ण अवसर है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह दिन देश में वैज्ञानिक संस्कृति को बढ़ावा देने का एक सशक्त मंच है। विज्ञान मानव जीवन को सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बनाता है। यह अंधविश्वास और रूढ़ियों को दूर कर तर्क, सत्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त करता है।

आज स्वास्थ्य, संचार, परिवहन और कृषि जैसे क्षेत्रों में विज्ञान ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। नई-नई तकनीकों के विकास से समय और श्रम की बचत हुई है तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार आया है। प्राकृतिक घटनाओं के रहस्यों को समझने में भी विज्ञान हमारी सहायता करता है। निस्संदेह, विज्ञान देश की प्रगति और आर्थिक विकास का आधार है। शिक्षा और अनुसंधान के माध्यम से यह नवाचार को निरंतर गति प्रदान करता है। वास्तव में विज्ञान मानव सभ्यता के उज्ज्वल भविष्य की सुदृढ़ नींव है।

बिजली, इंटरनेट, मोबाइल फोन और आधुनिक परिवहन साधन-ये सभी विज्ञान की ही देन हैं। चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में विज्ञान के कारण अभूतपूर्व प्रगति हुई है और अनेक गंभीर रोगों का उपचार संभव हो पाया है। कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति, उन्नत बीज, उर्वरक, आधुनिक सिंचाई तकनीक और कृषि मशीनरी ने उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की है। इंटरनेट, उपग्रह, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने सूचना को सुलभ बना दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन कक्षाएँ और डिजिटल पुस्तकालय ज्ञान के प्रसार को सरल बना रहे हैं। स्पष्ट है कि संचार और सूचना क्रांति विज्ञान के कारण ही संभव हो सकी है। आज अंतरिक्ष अनुसंधान और औद्योगिक विकास के क्षेत्र में निरंतर प्रगति हो रही है। विज्ञान ने सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल संरक्षण जैसी तकनीकों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के उपाय भी सुझाए हैं और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सच तो यह है कि विज्ञान केवल एक विषय नहीं, बल्कि जीवन जीने का आधार बन चुका है। हालांकि, विज्ञान का दुरुपयोग विनाशकारी सिद्ध हो सकता है, इसलिए आवश्यक है कि हम वैज्ञानिक सोच अपनाएँ और विज्ञान का उपयोग मानवता के कल्याण के लिए करें।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस केवल वैज्ञानिक उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच, जिज्ञासा और नवाचार को बढ़ावा देने का अवसर भी है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि विज्ञान मानव जीवन को बेहतर बनाने का सबसे सशक्त माध्यम है।

पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि यह दिन महान भारतीय वैज्ञानिक सी. वी. रमन द्वारा 28 फरवरी 1928 को 'रमन प्रभाव' की खोज की स्मृति में मनाया जाता है। इस खोज के लिए उन्हें वर्ष 1930 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। गौरतलब है कि वे विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम एशियाई वैज्ञानिक थे। वर्ष 1929 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'नाइट' की उपाधि से सम्मानित किया था। बाद में वर्ष 1954 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी अलंकृत किया गया।

सी. वी. रमन का जन्म 7 नवंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में हुआ था। उन्होंने मद्रास के प्रेसिडेंसी कॉलेज से भौतिकी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने प्रकाशिकी, प्रकाश प्रकीर्णन, एक्स-रे, ध्वनिकी और समुद्री रंग जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण शोध किया, जिसके परिणामस्वरूप 'रमन प्रभाव' की खोज संभव हुई। उन्होंने 1926 में इंडियन जर्नल ऑफ फिजिक्स, 1934 में इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज तथा 1948 में रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना की।

अब यहां प्रश्न यह उठता है कि आखिर रमन प्रभाव है क्या ? तो पाठकों को इस संदर्भ में जानकारी देता चलूं कि रमन प्रभाव उस भौतिक घटना को कहते हैं, जिसमें एकरंगी प्रकाश जब किसी पारदर्शी पदार्थ (जैसे जल या काँच) से होकर गुजरता है, तो उसका एक छोटा-सा भाग अपनी तरंगदैर्ध्य में परिवर्तन कर लेता है। यह परिवर्तन पदार्थ के अणुओं के साथ प्रकाश की पारस्परिक क्रिया के कारण होता है। इस प्रक्रिया को 'रमन प्रकीर्णन' भी कहा जाता है। सरल शब्दों में, जब प्रकाश की किरणें किसी पदार्थ से टकराकर अपनी ऊर्जा में थोड़ा परिवर्तन कर लेती हैं, तो उसी घटना को रमन प्रभाव कहा जाता है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की शुरुआत राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद की पहल पर हुई। वर्ष 1986 में परिषद ने भारत सरकार को प्रस्ताव दिया कि 28 फरवरी को विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाए। सरकार ने प्रस्ताव स्वीकार किया और 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस घोषित किया। पहली बार यह दिवस वर्ष 1987 में मनाया गया। इस दिन देशभर में विज्ञान प्रदर्शनियाँ, सेमिनार, कार्यशालाएँ, क्विज़ प्रतियोगिताएँ और जागरूकता कार्यक्रम आदि आयोजित किए जाते हैं। इसका उद्देश्य विज्ञान को आम जनजीवन से जोड़ना, युवाओं में वैज्ञानिक सोच विकसित करना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा उन्हें विज्ञान के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित करना है। साथ ही, यह विभिन्न वैज्ञानिक उपलब्धियों और शोध कार्यों को सम्मानित करने का भी अवसर प्रदान करता है।

प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस एक विशेष थीम पर आधारित होता है। वर्ष 2025 की थीम थी- 'विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व हेतु भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना ।' वास्तव में, यह थीम युवाओं को विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से भारत को वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनाने के लक्ष्य पर केंद्रित थी। इस वर्ष 2026 की थीम है- 'विज्ञान में महिलाएँः विकसित भारत को गति देने वाली शक्ति।' यह थीम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका, योगदान और नेतृत्व को उजागर करने तथा विकसित भारत के निर्माण में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित है।

अंततः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय विज्ञान दिवस हमें सी. वी. रमन की ऐतिहासिक खोज 'रमन प्रभाव' की याद दिलाता है। यह दिन केवल एक वैज्ञानिक उपलब्धि का स्मरण नहीं, बल्कि देश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता और नवाचार की भावना को सुदृढ़ करने का अवसर है। आज जब भारत तकनीक, अंतरिक्ष, चिकित्सा और अनुसंधान के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है, तब विज्ञान की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यह दिवस विद्यार्थियों और युवाओं को जिज्ञासा, प्रयोग और अनुसंधान के माध्यम से नए आयाम स्थापित करने की प्रेरणा देता है। निष्कर्षतः राष्ट्रीय विज्ञान दिवस हमें यह संदेश देता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और उज्ज्वल भविष्य का सशक्त आधार है।

जमशेदपुर में राष्ट्रपति पैदल चल कर जनता से मिली , बच्चों में बांटीं चाकलेट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , जमशेदपुर से महज चालीस, पैंतालीस किलोमीटर दुर ओडिशा की रायरंगपुर माटी से विधायक , मंत्री आगे राज्यपाल फिर राष्ट्रपति जैसी महत्वपूर्ण पदों में आसीन रही द्रौपदी मुर्मू एक अति जनप्रिय तस्वीर पुनः सामने आयी है । जब अपने जमशेदपुर दौरे के दौरान वृहस्पति वार बारीडीह क्षेत्र मे मणिपाल टाटा मेडिकल कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के बाद राष्ट्रपति ने अपना काफिला अचानक रुकवाया और सड़क किनारे खड़े लोगों से मिलने के लिए स्वयं गाड़ी से उतरकर पैदल चल पड़ीं।

कॉलेज कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जैसे ही राष्ट्रपति का काफिला बाहर निकला, सड़क के दोनों ओर बड़ी संख्या में लोग तिरंगा लिए खड़े थे। लोगों का उत्साह देखकर राष्ट्रपति ने वाहन रुकवाया और कर पैदल चलते हुए हाथ हिलाकर अभिवादन स्वीकार किया। इस दौरान "भारत माता की जय" के नारों से माहौल गूंज उठा।

राष्ट्रपति ने विशेष रूप से बच्चों से मुलाकात की और उन्हें अपने हाथों से चॉकलेट बांटी। भीड़ में मौजूद एक बच्ची ने बताया कि राष्ट्रपति ने उसे खुद चॉकलेट दी, जिसे वह कभी नहीं भूल पाएगी। राष्ट्रपति के आम लोगों के बीच आने से क्षेत्र में खुशी और उत्साह का माहौल देखने को मिला।

इस पूरे घटनाक्रम के दौरान सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह चाक-चौबंद रही और कहीं भी अव्यवस्था की स्थिति नहीं बनी। लोगों ने राष्ट्रपति को बेहद नजदीक से देखा और उनका अभिवादन किया।

इससे पहले राष्ट्रपति ने कदमा स्थित श्री जगन्नाथ आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धर्मार्थ केंद्र में भूमि पूजन कार्यक्रम में भाग लिया।

मणिपाल टाटा मेडिकल कॉलेज में आयोजित "परिचय सम्मेलन" के दौरान राष्ट्रपति ने विभिन्न सत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों के साथ फोटो सेशन किया और मेधावी विद्यार्थियों से संवाद भी किया। उन्होंने कॉलेज परिसर का निरीक्षण किया और पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के इस सादगीपूर्ण और संवेदनशील व्यवहार ने जमशेदपुरवासियों के दिलों में खास जगह बना ली और यह दौरा लंबे समय तक याद रखा जाएगा।

श्री श्याम निषाद परिवार द्वारा बेंगलुरु में पहली बार सूरजगढ़ निशान जैसी निशान अर्पित की गई

परिवहन विशेष न्यूज

बेंगलूरू: श्री श्याम निःस्वार्थ परिवार (रजि.) द्वारा 27 फरवरी, शुक्रवार को फाल्गुन शुक्ल पक्ष एकादशी के पावन अवसर पर भव्य फागण महोत्सव एवं निशुल्क निशान यात्रा का आयोजन श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ किया गया। यह दिव्य आयोजन बनरघट्टा रोड स्थित श्रीदेवी मुकाम्बिका मंदिर में अत्यंत भव्य रूप से संपन्न हुआ।

मंदिर प्रांगण में बाबा श्याम का आकर्षक एवं अलौकिक दरबार सजाया गया। सुगंधित पुष्पों एवं इत्र से सुसज्जित वातावरण में भजन-कीर्तन की मधुर प्रस्तुतियाँ हुईं। श्रद्धालुओं ने फूलों की होली खेलते हुए विधि-विधान से निशान पूजन किया। भक्तों के लिए महाप्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गई थी। तत्पश्चात बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हाथों में निशान लेकर "जय श्री श्याम" के जयकारों के साथ भव्य पैदल निशान यात्रा निकाली। बाबा श्याम की पावन पालकी भी अत्यंत श्रद्धा एवं अनुशासन के साथ निकाली गई। इस पावन निशान यात्रा में भक्तों द्वारा कुल 951 निशान बनरघट्टा नेशनल पार्क के समीप स्थित खाटू श्याम मंदिर में बाबा श्याम को अर्पित किए गए।विशेष उल्लेखनीय है कि श्री श्याम निःस्वार्थ परिवार द्वारा बेंगलूरू में पहली बार सूरजगढ़ निशान जैसी दिव्य एवं भव्य निशान अर्पित की गई, जिसने सम्पूर्ण आयोजन को ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय बना दिया।

मुख्यमंत्री मोहन माझी ने नितिन नवीन से मुलाकात की ,ओडिशा पार्टी के ऑर्गेनाइज़ेशनल स्टेटस और कोऑर्डिनेशन पर चर्चा की

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने शुक्रवार को BJP के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन से मुलाकात की। उन्होंने नई दिल्ली में BJP हेडक्वार्टर में राष्ट्रीय अध्यक्ष से मुलाकात की और ओडिशा पार्टी के ऑर्गेनाइजेशनल स्टेटस और कोऑर्डिनेशन पर चर्चा की।मीटिंग के बाद मुख्यमंत्री ने 'X' पर पोस्ट किया, 'आज भारतीय जनता पार्टी के प्रेसिडेंट @NitinNabin जी से मुलाकात हुई और ओडिशा में ऑर्गेनाइज़ेशनल कोऑर्डिनेशन को मज़बूत करने और डेवलपमेंट के कामों में तेज़ी लाने पर अच्छी बातचीत हुई। रहमने गुड गवर्नेंस, इनक्लूसिव ग्रोथ और हमारे राज्य के लोगों की भलाई के लिए अपने शेयर्ड कमिटमेंट को फिर से कन्फर्म किया है। हालांकि मीटिंग को फॉर्मली राज्य में ऑर्गेनाइज़ेशनल कोऑर्डिनेशन और डेवलपमेंट प्रायोरिटीज़ पर चर्चा बताया गया था, लेकिन राज्यसभा चुनाव की चर्चा के बीच मीटिंग का पॉलिटिकल महत्व बढ़ गया है। चार सीटों के लिए राज्य से संभावित उम्मीदवारों के बारे में अटकलें तेज़ हैं। उनकी मौजूदा लेजिस्लेटिव स्ट्रेंथ के आधार पर, BJP दो सीटें और BJD एक सीट जीत सकती है, जबकि किसी दूसरी पार्टी के पास चौथी सीट पक्की करने के लिए नंबर नहीं हैं। अब सभी की नज़रें चौथी सीट पर हैं।

आज बार काउंसिल पंजाब एवं हरियाणा के चुनाव के प्रचार के लिए मैं सोनीपत कोर्ट में था तो वहां पर कुछ अनवांटेड घटनाएं हुई

रजत कल्सन

सोनीपत कोर्ट में एक वकील साहब जो मलिक साहब थे, उन्होंने कहा कि हम तुम्हें वोट क्यों दें तुम हमें इतनी गालियां देते हो, तो मैंने उन्हें जवाब दिया कि वकील साहब मैंने कभी भी किसी विशेष जाति को गालियां नहीं दी, हां अगर मैं किसी विशेष केस में अनुसूचित जाति के पीड़ितों के लिए खड़ा होता हूं तो कुछ लोगों के पेट में दर्द हो जाता है अगर यही मेरा गुनाह है तो हम यह गुनाह करते रहेंगे , चुनाव तो आनी जानी बात है तो उसने मुझे कहा कि अगर हमारे साथ मिलकर चलोगे तो बड़ा नेता बना देंगे आपकी समाज की एक नेता हमारे साथ मिलकर चल रही है और हम उसका पूरा समर्थन कर रहे हैं ।

उन्होनें कहा कि मैं तो नेता बनना नहीं चाहता हल्का-फुल्का समाज का काम कर लेते हैं इतना ही काफी है। इसके बाद हम एक वकील से मिले जो ब्राह्मण समाज से थे तो मैंने अधिवक्ता सुनीता कल्सन का चुनाव कार्ड उन्हें दिया तो उस अधिवक्ता ने डॉ अंबेडकर जी की तस्वीर को देखकर कहा कि यह कौन है तो मैंने उन्हें बताया कि यह भारत के संविधान के चीफ आर्किटेक्ट हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि इस कार्ड पर उनका क्या काम है तो मैंने उनको कहा कि न्यायपालिका ,संसद सब डॉक्टर अंबेडकर जी की वजह से हैं और इसलिए हमने उनका फोटो अपने कार्ड पर लगाया है तो उन्होंने कहा कि वकील बिरादरी के इलेक्शन में इनका क्या रोल है तो मैंने उनसे कहा कि यह भारत के प्रथम कानून मंत्री थे तथा यह कोर्ट वगैरह सभी बाबा साहब की देन है इसी वजह से और जब बड़ी-बड़ी पार्टियों भारतीय जनता पार्टी ,इंडियन नेशनल लोकदल ,कांग्रेस ,आम आदमी पार्टी के नेता बाबा साहब का फोटो दिखाकर वोट मांग रहे हैं तो डॉक्टर बी आर अंबेडकर तो हमारे पूर्वज हैं तो हमारा भी यही हक़ बनता है अपने पूर्वज का फोटो अपने कार्ड पर लगाने क़ा उक्त अधिवक्ता जो 2022 में बार एसोसिएशन सोनीपत के प्रधान रहे हैं वह ख़िन्न हो गए और बोले कि चलो देखेंगे कि आपको वोट देना है या नहीं।

इसके बाद जब हम वोट मांगने के लिए आगे गए तो एक और ब्राह्मण अधिवक्ता से हमने विनम्र तरीके से वोट मांगे तो उन्होंने कार्ड पर मेरा नाम पढ़ कर कहा कि तेरे को कोई वोट नहीं देना जब मैं उनको कहा कि आपने तो वोट नहीं देना लेकिन बाकी वकीलों से तो वोट मांग सकते हैं तो उसने कहा कि जिसको मैं कहूंगा वहीं तेरे को वोट देगा और तेरे को यहां पर कोई वोट नहीं देगा यहां से निकल ले तो साथियों यह बातें मैं सोनीपत बार एसोसिएशन की बता रहा हूं लेकिन जब मैं अपने साथी अधिवक्तागण से मिला तो बहुत ही अच्छा अनुभव रहा और जब मेरे साथ ही अधिवक्ताओं को पता चला कि मैं यहां पर वोट मांगने के लिए आया हूं तो और बहुत ही सकारात्मक रुझान दिए और देखिए मैं यह बात आपको इसलिए बताना चाहता हूं कि हम सालों-सालों से इन लोगों को बिना किसी शर्त के वोट देते आ रहे हैं लेकिन जब हम को वोट की जरूरत पड़ती है तो यह किस तरह का व्यवहार करते हैं अब हम भाईचारे के नाम पर अपने वोटों की लूटपाट नहीं होने देंगे, वकील बुद्धिजीवी वर्ग होता है उनके लिए इशारा ही काफी है हमारे समाज की जो वकील सर्व समाज की बात करते हैं इसका मतलब कहीं ना कहीं उनकी सत्ता को स्वीकार करने की बात करते हैं लेकिन मैं उन लोगों में से नहीं हूं इलेक्शन मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं है जीतू या हारू मैं अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं करूंगा

लेकिन मुझे अपने समाज के वकीलों पर विश्वास है और जिन भी अपने साथी अधिवक्तागण से में मिला हूं उन्होंने विश्वास दिलाया है कि इस बार हमारे काम से कम दो सदस्य बार काउंसिल में पहुंचेंगे।

तो साथियों जिस उद्देश्य के लिए मैं बार एसोसिएशन सोनीपत में वोटो की प्रार्थना के लिए गया था वह उद्देश्य है कि मेरी पत्नी सुनीता कल्सन बार काउंसिल पंजाब एवं हरियाणा के सदस्य का चुनाव लड़ रही है जिसका बैलट नंबर 135 है सभी अधिवक्ता साथियों से अनुरोध है कि उसको प्रथम श्रेणी का वोट देकर सफल बनाएं, सामाजिक साथियों से अनुरोध है कि इस चुनाव को साधारण चुनाव से ना समझे यह एक ऐतिहासिक अवसर है अगर आपने अपनी बुद्धि व समझदारी तथा एकजुटता का परिचय दिया तो कम से कम हमारे दो सदस्य बार काउंसिल में आपका प्रतिनिधित्व करेंगे और आपको किसी के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी ।

झारखंड विधानसभा में अध्यक्ष , मुख्यमंत्री, विधायकों ने खेली फूलों की होली

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड विधानसभा के चल रहे बजट सत्र में आज की शाम होली मिलन समारोह का आयोजन हुआ । विधानसभा अध्यक्ष रबीन्द्र नाथ महतो और मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के साथ मंत्री गणों तथा विधायक गणों ने फूलों की होली खेली और एक -दूसरे को रंगों के त्योहार की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने राज्य वासियों को होली की बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आपकी जिंदगी में खुशियों का रंग हमेशा बरकरार रहे। उन्होंने कहा कि होली पारस्परिक प्रेम, आपसी भाईचारा और सौहार्द -सदभाव का पर्व है। इस त्योहार को हम सभी उमंग और उत्साह के साथ मन मोह लिया।

अमृतसर में तीन दिवसीय रंगला पंजाब उत्सव का भव्य शुभारंभ

कैबिनेट मंत्री हरभजन सिंह ईटीओ ने किया रंगला पंजाब उत्सव का उद्घाटन

पंजाबी संस्कृति विश्व की सबसे समृद्ध और जीवंत संस्कृतियों में से एक – कैबिनेट मंत्री हरभजन सिंह ईटीओ
मान सरकार पंजाब की सांस्कृतिक विरासत, रहन-सहन और खान-पान को विश्व स्तर पर प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध – ईटीओ
रंगला पंजाब उत्सव में देखने को मिल रहे हैं रंगले पंजाब के विविध रंग
खरीदारी के लिए क्राफ्ट बाजार और प्रदर्शनी के साथ-साथ फूड कोर्ट की भी व्यवस्था
तीनों शामों में प्रसिद्ध लोक गायकों द्वारा प्रस्तुत की जाएंगी संगीतमय प्रस्तुतियां
28 फरवरी और 1 मार्च की शाम को होगा ड्रोन शो
आम जनता के लिए प्रवेश पूर्णत : नि :शुल्क

अमृतसर, 27 फरवरी (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार के पर्यटन और सांस्कृतिक मामलों के विभाग द्वारा अमृतसर के रणजीत एवेन्यू मैदान में आयोजित तीन दिवसीय रंगला पंजाब उत्सव का आज पूर्ण शानो-शौकत के साथ शुभारंभ हो गया। इस उत्सव का उद्घाटन राज्य के लोक निर्माण मंत्री स हरभजन सिंह ईटीओ द्वारा किया गया। इस अवसर पर अमृतसर पूर्व की विधायक जीवनजोत कौर, अमृतसर पश्चिम के विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू, पनसप के चेयरमैन प्रभबीर सिंह बराड़, जिला योजना कमेटी के चेयरमैन गुर प्रताप सिंह संधू, पंजाब लघु उद्योग एवं निर्यात निगम के वाइस चेयरमैन जसकरण सिंह बंदेसा, पर्यटन विभाग के निदेशक संजीव कुमार तिवाड़ी, अतिरिक्त उपायुक्त (जनरल) रोहित गुप्ता, अतिरिक्त उपायुक्त (शहरी विकास) रुपिंदर पाल सिंह, एस.डी.एम. अलका कालिया, गुरमंदर सिंह के अतिरिक्त कैबिनेट मंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती सुरिंदर कौर, श्रीमती बलविंदर कौर, जिला टूरिज्म अफसर सुखमन सिंह, जी एन डी यू के लोक संपर्क निदेशक परवीन पुरी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

रंगला पंजाब उत्सव के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए लोक निर्माण मंत्री स हरभजन सिंह ईटीओ ने कहा कि इस तीन दिवसीय उत्सव का मुख्य उद्देश्य पंजाब की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, रहन-सहन और पारंपरिक खान-पान को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि रंगला पंजाब उत्सव में पंजाब की विविध सांस्कृतिक झलकियां एक ही मंच पर देखने को मिल रही हैं।

उन्होंने कहा कि पंजाबी संस्कृति विश्व की सबसे समृद्ध और जीवंत संस्कृतियों में से एक है, जो अपने विशिष्ट रहन-सहन, स्वादिष्ट खान-पान, लोक नृत्यों जैसे भांगड़ा और गिद्धा तथा भाईचारे की भावना के लिए जानी जाती है। इसकी पारंपरिक कलाएं, बोलियां और अतिथि सत्कार देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में राज्य सरकार पंजाब की समृद्ध विरासत को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास कर रही है। पर्यटन एवं सांस्कृतिक मामलों का विभाग प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर रहा है ताकि युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों और परंपराओं से जोड़ा जा सके। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने परिवार सहित इस उत्सव में पहुंचकर रंगले पंजाब की सुंदरता का आनंद लें।

पर्यटन विभाग के निदेशक संजीव तिवाड़ी ने बताया कि यह उत्सव 1 मार्च 2026 की देर शाम तक जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि यह उत्सव पंजाब, पंजाबी और पंजाबी संस्कृति को समर्पित है, जिसमें राज्य की सांस्कृतिक विरासत, रहन-सहन और पारंपरिक व्यंजनों की सुंदर झलक देखने को मिलती है।

उत्सव के दौरान आकर्षक क्राफ्ट बाजार लगाया गया है, जहां दुकानदार पारंपरिक पंजाबी हस्तशिल्प और अन्य वस्तुओं की बिक्री कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त फूड कोर्ट में विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के लगभग 30 स्टॉल लगाए गए हैं। बच्चों के मनोरंजन के लिए विशेष झूलों की भी व्यवस्था की गई है। साथ ही विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा भी अपने स्टॉल लगाकर जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जा रही है।

तीनों शामों में पंजाब के प्रसिद्ध गायक कलाकार अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों का मनोरंजन करेंगे। लोक नृत्य गिद्धा और भांगड़ा की रंगारंग प्रस्तुतियां भी आकर्षण का केंद्र रहेंगी।

27 फरवरी की शाम को पहले दिन प्रसिद्ध लोक गायक विरासत संधू, जसपिंदर नरूला और जैजी बी द्वारा प्रस्तुति दी जा रही है। दूसरे दिन मीट कौर, कौर बी और कुलविंदर बिल्ला अपनी गायकी प्रस्तुत करेंगे। अंतिम दिन हरजीत हरमन, बाणी संधू और मनमोहन वारिस अपनी प्रस्तुतियों से समां बांधेंगे। दर्शकों के बैठने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

28 फरवरी और 1 मार्च की शाम को आकर्षक ड्रोन शो भी आयोजित किया जाएगा।

निदेशक पर्यटन ने बताया कि इस उत्सव में आम जनता का प्रवेश पूर्णतः निःशुल्क है। उन्होंने जिला वासियों सहित समस्त पंजाबवासियों से अपील की कि वे अमृतसर के रणजीत एवेन्यू मैदान में आयोजित इस रंगला पंजाब उत्सव में पहुंचकर पंजाब, पंजाबी और पंजाबी संस्कृति की अद्भुत झलक का आनंद अवश्य लें।

करमजीत सिंह रिंटू द्वारा अमृतसर नॉर्थ के मुस्तफाबाद और देवी नगर में बड़े स्तर पर सड़कों के विकास कार्यों का उद्घाटन -- बुनियादी ढांचे को मिली नई रफ्तार

अमृतसर 27 फरवरी (साहिल बेरी)

विधानसभा क्षेत्र अमृतसर नॉर्थ में बुनियादी ढांचे के विकास को गति देने के उद्देश्य से करमजीत सिंह रिंटू द्वारा आज वार्ड नंबर 17 मुस्तफाबाद (बटाला रोड) में मेन बाजार, गली बुर्ज वाली तथा अन्य सभी गलियों के निर्माण कार्यों का विधिवत उद्घाटन किया गया। इसके साथ ही दयानंद नगर पंचायत के अंतर्गत देवी नगर में मेन बाजार की मुख्य सड़क और लिंक गलियों के निर्माण कार्यों की भी शुरुआत की गई।

इन क्षेत्रों में पहले ही नई और उन्नत सीवरेज प्रणाली बिछाई जा चुकी है, जिससे लंबे समय से चली आ रही जलभराव, गंदगी और सीवर जाम जैसी समस्याओं का स्थायी समाधान हुआ है। अब योजनाबद्ध तरीके से आधुनिक तकनीक के साथ मजबूत और टिकाऊ सड़कों का निर्माण किया जा रहा है, जिससे लोगों को दीर्घकालिक राहत मिलेगी।इस अवसर पर करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि अमृतसर नॉर्थ में विकास कार्य योजनाबद्ध और दूरदर्शी सोच के साथ किए जा रहे हैं। "हम पहले सीवरेज और पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं को दुरुस्त करते हैं, उसके बाद ही सड़क निर्माण करते हैं, ताकि बार-बार खुदाई की आवश्यकता न पड़े और लोगों को स्थायी राहत मिले," उन्होंने कहा। उन्होंने यह भी बताया कि पूरे क्षेत्र में संतुलित विकास सुनिश्चित किया जा रहा है और आने वाले समय में और बड़े प्रोजेक्ट शुरू किए जाएंगे।

स्थानीय निवासियों ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि लंबे समय बाद इस प्रकार के योजनाबद्ध और गुणवत्तापूर्ण विकास कार्य देखने को मिल रहे हैं, जिससे उनके दैनिक जीवन में बड़ा सुधार आएगा।

इस अवसर पर सीनियर डिप्टी मेयर श्रीमती प्रियंका शर्मा, काउंसलर अनेक सिंह, गुरजीत सिंह सोनू, राम लुभाया, सरपंच पवन कुमार (हैप्पी), ब्लॉक प्रधान शैला जी, हरमिंदर कौर मोंटू, शिंदी सबका सरपंच, किरणप्रीत सिंह, संदीप सिंह, पंधेर जी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति और बड़ी संख्या में स्थानीय निवासी उपस्थित रहे।

ये विकास कार्य अमृतसर नॉर्थ को एक मॉडल विधानसभा क्षेत्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023